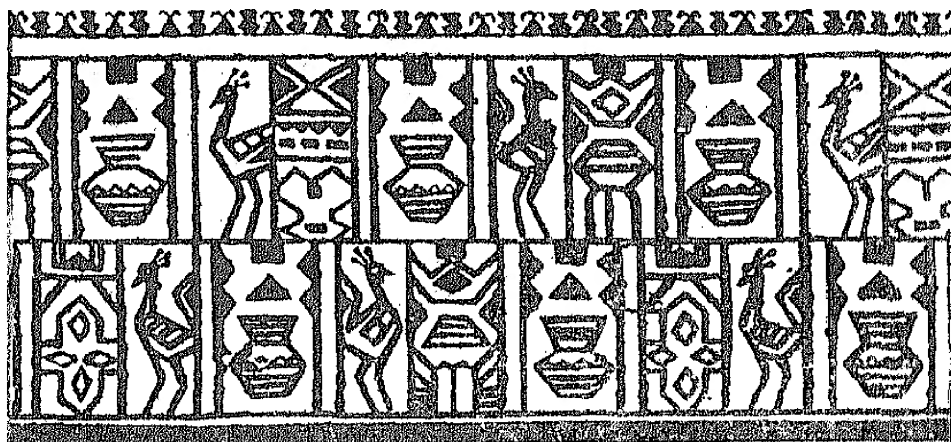


सचिकेता

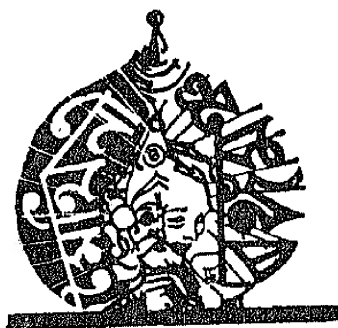
एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा



एक छल राजा एक छल राजा
 एक छल राजा एक छल राजा

एक बल राजा

नचिकेता



प्रकाशक

मैथिली रंगमंच

१६२/८५/ए०, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-४५

● प्रथम संस्करण :
जुलाई, १९७३ ई०

● प्रकाशक :
मैथिली रंगमंच
१६२/८५/ए०, लेक गार्डनस, कलकत्ता-४५

● स्वत्वाधिकारी :
नचिकेता

● मुद्रक :
अजय सिंह
सिंह प्रेस, कलकत्ता-४५

● मूल्य :
दू टाका

आमुख

मैथिली रंगमंच मैथिलीक लेल की कैलक ओ ?

मैथिली रंगमंच रंगमंचेक लेल की कैलक ?

नहि। ई कहब मिथ्या भाषण हैत जे मैथिली रंगमंच मैथिली के अपन प्राप्तव्य सम्मान दियैबाक लेल आन्दोलन कैलक, जुलूस निकाललक, नारा लगौलक, ई कैलक, ओ कैलक। ईहो नहि कहि सकैत छी जे मैथिली रंगमंच रंगमंचक दृश्य-सज्जा, व्यवस्थापन, अभिनय-कौशल, आलोक-सम्पात अथवा सुरसंयोजन मे वैलविक परिवर्तन आनलक अछि।

तखन मैथिली रंगमंच की कैलक ओ ?

मैथिली रंगमंच दावा नहि करैत अछि जे ओ मैथिली वा रंगमंचक लेल बहु कैलक अछि। किन्तु किछु त' अवश्य कैने अछि, कारण, हमरा लोकनि जनैत छी जे मैथिली क आन्दोलन ल' कए नेता लोकनि कतबो कियैक ने कूदथि, ओकर सफलता क लेल प्रयोजन अछि समृद्धिशाली साहित्य-रचना क'। और अन्यान्य साहित्यिक विधा जकाँ दृश्य काव्य क महत्त्व सेहो कम नहि छैक। तँ, साहित्यकार लोकनि केँ प्रोत्साहन देल गेल अछि नाटक लिखबाक हेतु। नाटक लिखल गेल; और मैथिली रंगमंच नाट्य-विधा क आधुनिक धारा केँ आत्मसात करैत ओही नाटक सभ केँ दर्शक क समक्ष उपस्थित कैलक। आइ प्रतिवेशी भाषा-प्रान्त बंगला, हिन्दी और मराठी क रंगमंच जतेक अगुआएल अछि, तकर मूल कारण क अनुसंधान क चेष्टा कैलक एवं ताही रूपेँ मैथिली नाटक सभ क संरचना एवं प्रस्तुति क' कए देखौलक जे हमहूँ सभ पछुआएल नहि छी। हँ, विलम्ब सँ अवश्य आरम्भ कैने छी। ताहि सँ की ?

मैथिली रंगमंच आइ धरि मैथिली और रंगमंच क उन्नति क हेतु सात गोटा नाटक नाट्यामोदी दर्शक लोकनि क समक्ष उपस्थित कैलक अछि—

सुखायल डारि : नव पल्लव, कुहेस, प्रेम : एक कबिता, निष्प्रदीप, आगन्तुक, बेमातर और सन्तान । और एही प्रचेष्टा सँ प्रेरणा ल' कए मिथिला क विभिन्न नाट्य-संस्था एहि नाटक सभ क अभिनय कैलक अछि । मैथिली रंगमंच मात्र अभिनये टा नहि कैलक अछि, एहि मे सँ सुखायल डारि : नव पल्लव, बेमातर, आगन्तुक, क्षमादान आ' सन्तान क प्रकाशन-भार सेहो सम्भारलक अछि । मैथिली रंगमंच एहि दीर्घ समय मे रंगमंच ल' कए जतेक जे परीक्षण चलौलक अछि, तकर सिद्धान्त सब केँ जाहि सँ प्रयुक्त कैल जाय, तकर चेष्टा क' रहल अछि । तँ मैथिली रंगमंच एहि बेरि उत्साह देखक एक गोटा नव नाट्यकार नबिकेता केँ,—कियैक त हुनक नाट्य-रचना मे प्रयोगवादी भावना क समावेश छन्हि, जकरा ल' कए मैथिली क कोनो नाट्य-संस्था सगर्व अन्यान्य भाषा सम्प्रदायक नाट्य-प्रेमी दर्शक-समालोचक क समक्ष ठाढ़ भ' सकै एवं सार्थक अभिनय सँ मैथिली क नाट्य - विधाक अग्रगति क उद्घोष क' सकै । इच्छानुसार सार्थक नाटक हाथ मे पाबि मैथिली रंगमंच अपन निष्ठाशील अभिनेता-अभिनेत्री सभ केँ ल' कए तँ मैथिली नाट्यामोदी दर्शकवृन्द क समक्ष उपस्थित भ' रहल अछि । आ' एकर बाद मैथिली रंगमंच एही प्रकारेँ नाटक-प्रकाशन तथा अभिनय द्वारा भारतीय नाट्य - साहित्य क श्री-वृद्धि करवा मे दत्तचित्त रहत ।

आशा अछि, एहि दिशा मे अपने लोकनि सहृदय पाठक तथा दर्शक क रूप मे हमरा लोकनि केँ उत्साह तथा आशीर्वाद प्रदान करब ।

बिनीस,

मंत्री, मैथिली रंगमंच

पात्र - परिचिति

अभिमान कुमार देव	— विलासपुर क भूतपूर्व राजा ।
विरंचि	— विलासपुर क दीवान ।
धनिक लाल	— विलासपुर क राजमहल मे प्रतिपालित, किन्तु सम्प्रति शहर क प्रसाद सँ अकस्मात् धन-सम्पन्न ।
शुभंकर	— शहर क एक प्रोफेसर; मोहिनी क संभावित वर ।
चतुर लाल	— अभिमान कुमार क खवास ।
प्रथम वादक	— नाट्य-मंडली क सदस्य ।
द्वितीय वादक	— " "
गायक	— " "
घोषक	— " "
सरमा	— विलासपुर क रानी ।
मोहिनी	— विलासपुर क राजकन्या ।
पन्नाबाइ	— प्रख्यात गायिका ।

प्रथम आभिनय रजनी
आन्ध्र एसोसियेशन हॉल, कलकत्ता
८ जुलाई, १९७३ ई०

राजा	—	मोहन चौधरी
विरंचि	—	गौतम भारती
धनिक लाल	—	सदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
शुभंकर	—	रामलोचन ठाकुर
चतुर लाल	—	इन्द्र नारायण मिश्र
प्रथम वादक	—	रत्नाकर
द्वितीय वादक	—	शिशिर दास
गायक	—	श्रीकान्त मंडल
घोषक	—	
सरमा	—	दीपाली चौधरी
मोहिनी	—	चन्द्रकला किरण
पद्माबाइ	—	

नाट्य-संरचना क अन्यतम उन्नायक

श्री सीताराम भा के एवं

श्रीमती उर्मिला भा के

—नचिकेता

एक बल राजा

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

[मंच क एक कोन पर अग्रभाग मे वादक-गायक आदि बैसल छथि । ओ सब आत्मविभोर भए कोनो श्रुतिमधुर संगीत क आवृत्ति क' रहल छथि । आलोक केवल हुनकहि लोकनिक ऊपर पड़ैत अछि । मंचक अन्य भाग मे अन्धकार प्रसरित अछि । मंच क पश्च भाग क मध्य मे काठ क एक सुसज्जित उच्चासन राखल अछि । तकर पाछाँ दिसि एकटा चित्राङ्कित चट टांगल अछि । एकदम पाछाँ दिसि एक करिया पर्दा भूलि रहल अछि । उच्चासन क दुनू दिसि अपेक्षाकृत कम ऊँच मंचिका राखल अछि । एक दिसि एकटा टेबुल लैम्प राखल अछि । नाटक क आरम्भ मे गायक-वादक मंडली क अतिरिक्त और किछु नहि दृष्टि-गोचर भ' रहल अछि ।]

गायक—हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौ सैंयो होमय
अवगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

प्रथम वादक—[यन्त्र-वादन स्थगित करैत] नहि, बहुत भेल, आव
बन्द करू ।

गायक—[उदास भ' कए] अरे, अहूँ अजब छी ! बिचहि मे बाजा बन्द क' देलहुँ ।

प्रथम वादक—रिहर्सल क प्रयोजने नहि अछि । एकाध बेर भेल थोड़वे ? तकर अलावे आव नाटक आरम्भ हैत ।

गायक—से जखन हैत, हैत ।

प्रथम वादक—जखन हैत, हैत नहि; देखू ने, पाछाँ पर्दा टांगल भ' गेल छैक । आव नाटक आरम्भ होयबा मे जे देरी होइक ।

गायक—से त ठीके । समय त भ' गेल ।

प्रथम वादक—और दर्शको सब अगुता गेल छथि । देखैत नहि छियैक ?

गायक—[दर्शक-वृन्द पर दृष्टिपात करैत] हँ; से त देखिये रहल छी । अगुतैता कियैक नहि ?

द्वितीय वादक—[कनेक खौंभाइत] कियैक अगुतायल छथि ओ लोकनि ?

प्रथम वादक—अरे, चुप रह मुख, अगुतैता नहि ? राति कि कम भेलैक अछि ?

गायक—नहि-नहि, सेह टा नहि । नाटको छैक तेहने ।

द्वितीय वादक—केहन ?

गायक—[द्वितीय वादक दिसि ध्यान नहि दैत] पहिने त नामे सँ लोक मुख भ' जाइत अछि..... —“एक छल राजा” । कहू त, एहन आधुनिक नाम !

द्वितीय वादक—[अपाटक-बकलेल जकाँ हँसैत] हे, हे ! आधुनिक ! [जेना किछु मजेदार संवाद हो] ।

प्रथम वादक—[मुँह दुसैत] हे, हे ! [संगहि संग द्वितीय वादक चुप भ' जाइछ] तों आधुनिकता की बुझैत छै रौ ? कह त, नाट्यकार के छथि ?

द्वितीय वादक—[सप्रतिभ भ' कए] नाट्यभार ?

प्रथम वादक—नाट्यभार नहि रौ, नाट्यकार ।

द्वितीय वादक—[हँसबाक चेष्टा करैत] हँ, हँ, सैह त; नटकार । [चालाक

बनवाक चेष्टा करैत] नट्टकार । माने..... [हाथ डोलवैत] माने...
नाट्टकार ।

प्रथम वादक—हम तोरा सँ नाट्यकार शब्द क अर्थ नहि पुछलियौक !

[कनेक चुप्पीक पश्चात्] ई नाटक ककर लिखल थिकैक ?

द्वितीय वादक—[माथक केश नोचैत] सैह त..... [गायक केँ] ककर
लिखल थीक ?

गायक—नचिकेता क !

द्वितीय वादक—नचिकेता क । ओ ! जनिक आन नाटक मे हम तबला
बजौने छलहुँ..... तबला— [कहव शुरू करैछ उत्साह सँ, मुदा प्रथम
वादक क आँखि मे क्रोधाभास देखैत वाक्य विसरि जाइछ आ' हाथ
सँ मात्र तबला पिटवाक अभिनय करैत हास्य क परिवेश ल'
आनेत अछि ।]

गायक—[हँसैत] खैर, तोरा आव नाट्यकार क गुण क बखान नहि करै
पड़तौक । तौ तबला पीट, ता हम एक बेर रिहर्सल द' ली ।

प्रथम वादक—[पुनः यन्त्र बजैवाक उपक्रम करैत अछि] हँ, शुरू करू ।

गायक—[गीत शुरू करैत छथि—]

हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौँ सैथो होमय
अबगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

घोषक—[एतवहि मे धड़फड़ायल मंच क सीढ़ी सँ मंच पर चढ़ैत] अरे ! बन्द
करह, बन्द करह ई तमाशा !

गायक—[सबहक चुप हैवाक पश्चात्] कियैक ?

घोषक—कडैत छियह बाद मे । घर जाइत-जाइत कहबह ! देखियह,
माइक देखियह ! [माइक घिसियावैत, तकरा ऊँच क' कएँ रुमाल सँ

मुँह पोंछि] साफ करब ! रिहसल क बीच मे आवि कए हम बाधा देलहुँ । तँ हम क्षमा - प्रार्थी छी । [हाँफैत - हाँफैत] अपने सब केँ हम जे दुस्संवाद द' रहल छी ताहि सँ हमरे टा नहि, सब केँ दुःख हैत । [कनेक चुप होइत] एखनहि हमरा खबरि भेटल जे राजा अभिमान कुमार देव क स्वर्गवास भ' गेलन्हि अछि । [दर्शक मंडली मध्य सँ शोक - सूचक ध्वनि उठल । 'कहिया', 'कोना' आदि शब्द सुनबा मे आवै लागल] सब किछु कहैत छी । कने धैर्य राखू । अहाँ सब जनिते छी । एहि देस - कोसक अधिकांश लोक हिनका जनैत छथि । ओ केवल अपनहि स्थानक संस्था आ संघ सभ क नहि, वरंच बहुतो ठामक संघ - सोसाइटी क सक्रिय सदस्य रहथि । हुनका सन महान आ' उदार हृदय क व्यक्ति आजुक युग मे भेटब दुर्लभ अछि । तँ आउ, हम सब पहिने हुनक आत्मा क चिर शान्ति क लेल एक मिनिट धरि नीरवता क पालन करी ।

[दर्शक - वृन्द मे सँ किछु गोटे ठाढ़ भए मौन प्रार्थना करैत छथि । देखैत - देखैत सब क्यो ठाढ़ भ' जैताह ।] हँ, आब सब क्यो बैस सकैत छी । एखन पहिने हुनक आत्मा क शान्ति क लेल आजुक नाटक क गवैया श्री गुलाबजी केँ हम एकटा शोक - संगीत सुनैवाक अनुरोध करैत छियन्हि ।

गायक—[ठाढ़ भ' कए साइक क सम्मुख आवि चिहल कंठेँ] आजुक अनुष्ठान क पाछाँ राजा साहब क जे अवदान अछि से त अहाँ सब जानितहि हैकै । तँ हुनका सम्बन्ध मे किछु बाजब सूर्य केँ दीपक देखायब हैत । हमरा लेल ई दुःख क बात जे हमरहि पर भार पड़ल हुनका लेल प्रार्थना - गीत गैवाक और से आजुक अवसर पर जखनि कि.....[कहैत - कहैत कंठावरोध भ' जाइत छन्हि । सायास अपना केँ सम्हारैत गीत प्रारम्भ करैत छथि ।]

ई जीवन
 ई जीवन
 ई जीवन एक पहेली !
 क्यो जीतय
 क्यो हारय
 क्यो हँसय और क्यो कानय !
 आशा और निराशा
 जीवन केर सहेली;
 ई जीवन एक पहेली !

घोषक—[गीत शेष हैबाक पश्चात् गायक-वादक दिशि इंगित करैत छथि ।
 इंगित पाबि ओ लोकनि मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि ।] क्षमा
 करब । राजा साहब क असामयिक मृत्यु हमरा सभक नाटकहु केँ
 बड़ धक्का पहुँचौलक अछि । नचिकेताजी क जाहि ऐतिहासिक नाटक
 'एक छल राजा' क अभिनयक घोषणा हम सब केँने छलहुँ तकरा
 उपस्थित करवा मे एखनि..... [कहैत-कहैत थम्हि कए] जे हो; हम
 देखि रहल छी जे भीतर की अवस्था अछि । तावत् राजा साहब क
 विषय मे अपने सब केँ श्री धनिक लालजी किछु कहताह । [उच्च स्वरें
 बजबैत] धनिक लालजी !

धनिक लाल—एलहुँ । [दर्शक-मंडली क मध्य सँ उठि कए मंचक सामने क
 सीढ़ी द' कए चढ़ि मंचक एक दिशि ठाढ़ होइत छथि । घोषक क
 निष्क्रमण भ' जाइछ । आलोक केवल धनिक लालजी पर पड़ैत अछि ।
 ओ माइक केँ घिसिया कए एक कोन मे आनि, भाषण आरम्भ करैत
 छथि ।] उपस्थित सज्जनवृन्द ! [खखसैत] हमरा आदेश भेटल
 अछि श्री अभिमान..... नहि-नहि राजा श्री अभिमान कुमार देव क
 विषय मे किछु कहबाक लेल ।ओ बड़ नीक लोक छलाह ।

हुनका सनक महान् व्यक्तिक सम्बन्ध मे हम एतबहि कहब जे...जे...जे
[बुझना जाइख जेना किछु बिसरि गेल होथि । ताघत रानी सरमा
प्रवेश करैत छथि । मंचक अग्रभागक आलोक सहसा अधिक उद्भा-
सित भ' जाइत अछि और पश्चभाग अन्धकार-पूर्णहि रहि जाइख ।]

सरमा—[बताहि जकाँ आवेश-पूर्ण स्वर मे] बन्द करह ! बन्द करह !!
बस, बहुत भेल ई नाटक । हम तोहर भूठ बात नहि सुनै चाहैत छी ।
मोहिनी—[प्रवेश कए अपन माथ केँ संहारबाक चेष्टा करैत अछि] माय !
माय ! ई तौ की क' रहल छें ? एतेक लोक क सामने राज-रानी भ'
कए तौ.....

सरमा—[डाँटैत] चुप रह अभागलि, चुप ! के राजा ? के रानी ?
तौ हँसी क' रहल छें ?

मोहिनी—माय, ई की भ' गेलौक तोरा ? हे भगवान् !

सरमा—भगवान् ! के भगवान् ? जे निष्ठुर हाथेँ हमर सीथ क सिन्दूर मेटा
देलक ? जे हमर समस्त व्रत-साधना सब विफल कए..... [कहैत-
कहैत कानै लागैत छथि । तखनहि धनिक लाल द्रुत वेगें प्रस्थान
करैत अछि ।]

मोहिनी—[सान्त्वना क स्वर मे] माय, तौ..... तौ बताहि भ' गेल
छें की ?

सरमा—[कानैत और हँसैत] हँ; हम बताहि छी..... हम बताहि.....
[ओम्हर पाछाँ से टाँगल पर्दा धीरे-धीरे उठाओल जाइख । मंच क
पश्च भाग मे अन्हार पसरल अछि ।]

मोहिनी—नहि माय, तौ रानी छियें, रानी सरमा, महाराज अभिमान
कुमार देवक रानी और हमर माय !

सरमा—[कौतुक भरल दृष्टि सँ एक बेर ताकि कए उच्च स्वरें अट्टहास करैत]
राजा.....रानी.....हम रानी आ' तौ राजकन्या.....
[हँसैत कानैत आँखि मे नोर आवि जाइत छनिह ।]

मोहिनी—माय, की तौ रानी नहि छिये ? की बाबूजी राजा नहि.....?

सरमा—क्यो किलु नहि अछि । आब क्यो किछु नहि । [विचित्र दृष्टिँ ताकैत] सब चलि गेल ! धन छल, राज छल, प्रजा छल, राजा छल, [कहैत-कहैत दृष्टि प्रखर भ' जाइत छन्हि] हँ; एखनि क्यो राजा नहि । छल एक टा राजा ! [मंचक दहिन कोन दिसि आबैत छथि । अग्र भागक आलोक मद्धिम भए सिक्का जाइछ । मात्र सरमा तथा मोहिनी पर आलोक-पात भ' रहल अछि ।] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी । राजा मरि गेल शेष कहानी । तुमलें मोहिनी ? एक छल राजा एक छल रानी..... !

मोहिनी—[अश्रु बेग केँ रोकैत] माय !

सरमा—[आरो उच्च स्वरें] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी; [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत छथि । पाछाँ लागल मोहिनियो चलि जाइत अछि । आलोक-पात बन्द भ' जाइछ । चारु दिसि सँ प्रतिध्वनित भ' रहल अछि नारी कंठ क स्वर “एक छल राजा, एक छल रानी ।” आवाज धीरे-धीरे मद्धिम भ' जाइत अछि ।]

द्वितीय दृश्य

राजा अभिमान कुमार देव—[अन्हारे मे] के ? [तावत् सरमा क स्वर भासल आवि रहल छल । धीरे-धीरे प्रकाश होइछ आ' समस्त शब्द बन्द भ' जाइछ । राजा उच्चासन पर बैसल छथि । हुनक मुख पर अल्प छाया पड़ैछ । मंच पर धीरे-धीरे अल्प आलोक पसरैत अछि । राजा उठैत] के ? के थिकहुँ ?

विरंचि—[नेपथ्य सँ] हम छी सरकार, विरंचि ।

राजा—ओ ! आठ ।

विरंचि—[प्रवेश करैत छथि । पीठ झुकल । हाथ मे लाठी, नाक पर चश्मा, बाम हाथे कागज-पत्र नेने] आइ सरकार अन्हार क' कए बैसल छी ई सँभूके पहर ?

राजा—हवेली क काज मे चतुर केँ पठौने छथिन्ह ।

विरंचि—ओकरा त हम बहुत काल पहिने जाइत देखलहुँ । तखन एखनहुँ त क आयल कियैक नहि ? [किछु काल सोचैत] सरकार !

राजा—[किछु सोचैत छलाह । ध्यान भग भेला पर] उँ !

विरंचि—आइ हम गेल छलहुँ ।

राजा—कतय ?

विरंचि—पन्नावाइ क ओतय । मुदा.....

राजा—मुदा की ? [उठि कए बैसैत] की ओ मुजरा नहि गइलक ?

विरंचि—नहि, गइत कियैक नहि ? अपने ओकरा महफिल मे बजा रहल छी, आ' ओ नहि आबै चाहत ?

राजा—तखन ?

विरंचि—तखन.....[किछु काल चुप रहि जाइत छथि] ।

राजा—[गरजैत] विरंचि !

विरंचि—माफ करव सरकार, हम कोना कहू जे राज-कोष मे किछु नहि छैक !

राजा—[बड़-बड़ करैत] नहि ! ई नहि भ' सकैछ !

विरंचि—ई भ' सकैछ, आ भेल अछि सरकार ! एखन की पहिलुका ओ आमद रहलैक ? सरकार जे किछु दैत छल सेहो बन्द भ' गेल । प्रजा नामक कोनो वस्तु रहलैक नहि ।

राजा—ई सब हम जनैत छी दीवान जी ! आ' अहीं बहुत बेर सुना चुकल छी, किन्तु ई सब हमरा सख नहि होइछ ।

विरंचि—हमरहि की कहना मे कोनो आनन्द भेटैत अछि ? मुदा, एखनि एहन आमद मे एतेक पैघ खर्च कोना पार लागत ?

राजा—[शून्य दिसि देखैत] कोना पार लागत ? सात साल सँ प्रत्येक वर्ष इयेह सुनैत आयल छी जे कोशी क सत्यानाशी बाढ़ि सब किछु भसिया कए ल' गेल । प्रति वर्ष जमीन-जगह बेचि कए सब खर्च ओना चलैत आयल अछि, अहू बेर तहिना चलत ।

विरंचि—सरकार !

राजा—की करू ? एक टा वेटो नहि अछि जे निर्लज्ज जकाँ औखि-कान मुनने तकरहि कमाइ खाइत रही ।

विरंचि—सरकार !

राजा—[पाछाँ मुड़ि कए] कहलहुँ त; खर्च नहि चलैत अछि त जमीन कियैक नहि बेचैत छी ?

विरंचि—कोन जमीन सरकार ?

राजा—कियैक, ओ पोखरि पर क.....

विरंचि—सरकार ! ओ सब किछु नहि बचल ।

राजा—[क्रुद्ध भए टहलैत] नहि बचल तखन हम की करू ? एक हमही टा बाकी छी; हमरहि बेचि लिय' । [राजा धुर-महुर कर' लगैत छथि ।

विरंचि किछु कहवाक चेष्टा करैत अछि, किन्तु कहि नहि होइत छैक]
 आब ठाढ़ की छी ? जाउ, आ' सन्दूक मे जे किछु अछि से सब कोनो
 महाजन क पास ल' जा कए बूझू ग' जे कत्तेक हैत । [विरंचि केँ
 तैयो ठाढ़ देखि] की ? ओहो सब समाप्त क' देलहुँ की ? [विरंचि
 माथ झुका लैत छथि] बाह ! तखन आर की चाही ? किछु जखन
 अछिये नहि !

विरंचि—किछु कियैक नहि रहत मालिक ! किन्तु अहाँ जेना बलाबै कहै छी
 ताहि मे त एकहि-दुइ मास मे सब टा स्वाहा भ' जायत ।

राजा—दीवान जी !

विरंचि—हँ सरकार ! ई सब बात कहवाक अधिकार हमरा नहि अछि
 से हम जनैत छी । तैयो हम कहब । एना अहाँ ध्वंस भ' जायब ।
 बिलासपुर क ई राजमहल उजड़ि जायत सरकार !

राजा—[अगुआ कए] ठीके हैत ! ई सबटा पूर्वपुरुष क पाप क फल थीक ।
 हमर पुरुखा सब जत्तेक सती नारी क अभिशाप जुटौलन्हि, जत्तेक
 प्रजा क मुख क घास छिनलन्हि, जत्तेक अनाचार कैलन्हि—ई सब
 तकरहि फल थीक । जनैत छी, राति मे जखन हम सूत' चाहे छी त
 हमर कान मे माटि क तर सँ क्रन्दन और चीत्कार भासल आवैत अछि ।
 बिछौना क चारु कात हम रक्त-स्रोत देखै छी । और ओहि स्रोत क
 संग पायल क झुनझुन आ' सारंगी क क्रन्दन । हमर हाथ दिसि देखू,
 शोणित लागल अछि शोणित ! हमर नीन्द टूटि जाइत अछि और
 दुनू हाथ केँ हम मलैत रहै छी, रगड़ैत रहै छी, मुदा रक्त क चेन्ह नहि
 मेटाइत अछि ।

विरंचि—संकार !

राजा—हँ ! हम घर क देवाल पर एक टा कारी छाया देखैत छी । ओ
 छाया हमरा घास करवा क लेल दौड़ल आवैछ । ओकर मुख मे लागल
 अछि लाल - लाल रक्त । हमर देह पसीना - पसीना भ' जाइछ आ'

ओहि पसीना क प्रत्येक बुन्द मे ओहि छाया के देखै छी । कारी छाया
और लाल रक्त । तखन हम चिकरि चठै छी ।

विरंचि—[जोर सँ] सरकार !

राजा—[होश मे आवि] के ? अ ! अहाँ ? अहाँ की ने कहैत छलहुँ ?

विरंचि—हम की कहब सरकार ? छोट मुहँ, पैघ बात भ' जायत ।

[एक क्षण मौन क बाद] हम कहैत छलहुँ जे कहुना कए जौं फिजूल
खर्च केँ रोकल जाय त..... ।

राजा—[भौं सिकोड़ि कए] फिजूल खर्च ? अहाँ कह' की चाहैत छी ?

विरंचि—एखनहुँ राजमहल मे पच्चीस - पचास बाहर क लोक पड़ल
खाइत अछि ।

राजा—ओ सब हमर आश्रित धिकाह ।

विरंचि—मुदा जखन हमही सब आश्रय खोजि रहल छी, तखन हुनका
सभक दायित्व..... ।

राजा—अहाँ करै की चाहैत छी ?

विरंचि—हुनका सब केँ हाथ - पाँव जोड़ि कए बिदा करै चाहैत छी । ताहि
मे किछु पाइयो देब' पड़ै त सेहो नीक ।

राजा—[निस्पृह भावें] बेस, जे इच्छा होमय से करू ।

विरंचि—आरो एक टा बात छल.....

राजा—[आन दिसि मुहँ फेरैत] कहू ।

विरंचि—एहि बेरि जौं दुर्गा-पूजा मे.....

राजा—[किछु क्रुद्ध भ' कए] अहाँ की चाहैत छी जे सेहो वन्द क' दी ?

विरंचि—नहि सरकार ! हम से कतय कहैत छी ? हम त मात्र खर्च कम
करबाक लेल कहैत छलहुँ.....

राजा—[दर्शक दिसि देखैत] की हम एहन हतभाग्य छी जे मा केर
पूजाओ करबा क क्षमता हमरा मे नहि रहल ?

विरंचि—अहाँ सब सँ बरस सँ खूब धूम - धाम क संग पूजा करैत ऐलहुँ ।

एम्हर कैक वर्ष सँ ताहि मे किछु कमी भ' गेल अछि। पहिने एहि अवसर पर नाच, गाना, नाटक सब किछु होइत छल। तैयो गत चारि वर्ष त आर सब किछु भेवे कैल, मात्र नाटक टा नहि भेल। गत वर्षो त पन्नाबाइ अपन मुजरा पेश कैने छल। नाटक नहि भेल छल त की भेल ?

राजा—एकर बाद, अहाँ कहब, एहि बेरि नृत्यो - गीत नहि हैत त कोन हरज ?

विरंचि—सैह त कहैत छलहुँ जे एहि बेरि जौ पन्नाबाइ केँ.....

राजा—नहि, कथमपि नहि।

विरंचि—[अनुनय-पूर्ण कण्ठ] सरकार !

राजा—नहि, दीवानजी, नहि। हम जा धरि जीवित छी ता धरि ई सब बन्द नहि होमय देब। भने ताहि लेल हमर सवास चलि जाइक।

विरंचि—आब बाकी की रहल सरकार ? सब त चलिये गेल। एतबा धरि जे राजमहलो क आधा गिरवी पर अछि।

[तावत सरमा प्रवेश क' कए चट क अ'ढ़ मे ठाढ़ भ' जाइत छथि]।

राजा—हे भगवान ! हमर मृत्यु कियैक नहि होइछ तकर पहिने ? आब सैह टा बाकी अछि। [एतबा मे चट क अ'ढ़ सँ कनेक निकलैत, दर्शक क दृष्टि क सम्मुख अबैत राना क चूड़ी क आवाज सुनाइ पड़ैछ]।

सरमा—की सब अशुभ बात मुँह सँ निकालैत छी ?

राजा—[सरमा दिसि धूमि कए चट क पास जा कए] खराब त अवश्य लगैत हैत सुन' मे, मुदा आब दोसर कोनो पथ नहि।

सरमा—बहुत पथ अछि। एतय बगलहि मे विष्णुपुर क अर्जुन बाबू केँ देखू। एतय सब किछु बेचि कए ओ शहर चलि गेलाह; ओतय छोटा-छोटीन मकान बना कए.....

राजा—हँ ! हँ ! मकान बना कए ताहि मे अपराधी जकाँ नुका रहैत छथि जाहि सँ शहरहु मे विष्णुपुर-बिलासपुर क कयो भेंटि ने जाइत ! नहि

सरमा, ई हमरा स नहि हैत । हम चोर जकाँ रातु क अन्धकार मे पड़ा नहि सकब । ताहि सँ त मृत्युए नीक ।

सरमा—छिः ! एना नहि बाज् ।

विरंचि—की कहव रानी जी ? हम त कत्तेक बेरि सरकार केँ समझैलहुँ-
बुझैलहुँ जे एखनहु जौँ सम्हारि कए चली, त चलि सकैत अछि ।

राजा—की चलि सकैत अछि दीधान जी ? [म्लान हँसैत] तखन हँ,
हमर मृत्यु क उपरान्त श्राद्ध क खर्च नीक जकाँ कैल जा सकत ।

सरमा—अहाँ बन्द करब कि नहि एहन सब बात । की भेल अछि अहाँ केँ ?

विरंचि—अहीं समझबिऔन रानीजी ! हम तावत चलै छी । कालिह भोरे
चलि आयब । पूजा मे सेहो आव बेसी देरी नहि रहल ।

राजा—अहाँ कहैत छी, एहन सब बात जुनि करू, मुदा विलासपुर-विष्णु-
पुर क सब लोक भीषण कौतुक सँ हमरा समक जीवाक संग्राम दिशि
देखि रहल छथि । ओ सब देखि रहल छथि जेना कोनो विद्योगान्त
नाटक हो । ओ सब मने-मन सोखि रहल छथि जे कखन महाराजा-
धिराज मरताह आ' हम सब हुनक श्राद्ध क लेल के कनो चन्दा देब ।

सरमा—आह, फेर वैह बात ? तखन अहाँ हयैह सब सोचैत रहू, हम जाइत
छी । ओम्हर बेटी क लहूही भ' गेल अछि आ' ओ कालिहये आवि
रहल अछि, से मन अछि ?

राजा—[श्वगतप्राय] मोहिनी, हमर बेटी, राजकन्या ! लाजे शहर मे
बाप क नामो नहि कहैत हैत ।

सरमा—कालिह ओकर आरो एकटा चिट्ठी भेंटल अछि । [आनन्द क
मुद्रा मे] जनैत छी, की लिखलक अछि ?

राजा—नथ की लिखत ?

राजा—[किलू काल चूप रहि कए] ओ अपन वर पसिन्न क' लेने अछि ।

राजा—[उत्तेजित भए] की ? की कहलहुँ ?

सरमा—एहि मे उत्तेजित हैवाक कोन बात अछि ?

राजा—[पदचारणा करैत मंच क सम्मुख भाग मे आवै छथि] ओह, अहाँ कि पाथर भ' गेल छी सरमा ? अहाँ क प्रत्येक शब्द हमर देह केँ जेना भरका देलक अछि । छिः, छिः, छिः, कसोक लज्जा क.....

सरमा—एहि मे लज्जा क कोन बात अछि ? आइ-कालिह छोटा-पैघ सब क घर मे बेटी क बियाह क रीति बदलि गेल अछि । आब हमरा सब क जमाना नहि रहल । आब धी-बेटी अपन वर अपनहि पसिन्न करैत अछि ।

राजा—हमरा ताहि लेल लाज नहि अछि जे हमर बेटी हमर पसिन्न कैल वर सँ बियाह नहि करत ।

सरमा—तखन लाज कथी क ? समाज क ?

राजा—नहि ! लाज अपन अस्तित्व पर । लाज नहि, ओकरा घृणा कहब उचित हैत । हम बेटी क बियाह करबाक योग्य नहि छी, से मोहिनी आंगुर उठा कए हमरा बुझा देलक । बुझा देलक जे हमर एहि विशाल महल क भीतर एक टा बिराट शून्यता अछि; सब फोंक अछि—हम, हमर राज्य, हमर क्षमता, हमर अर्थ, हमर स्नेह..... ['कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छनिह ।]

सरमा—[कनैत-कनैत अपना केँ सम्हारि कए] ई की ? अहाँ कनैत छी ?

राजा—नहि, [स्वर बदलि जाइछ] राजा अभिमान देब कनैत नहि अछि । अभिमान क दयो कानव सिखौलकै नहि । कहू, ओ आर की लिखलक ?

सरमा—ओ लिखलक अछि जे भाबी वर केँ ल' कए ओ कालिह आवि रहल अछि ।

राजा—कालिह ?

[मंच अन्हार भ' जाइछ ।]

तृतीय दृश्य

[अन्हार से एक टा टपटम चलवाक शब्द आ' घोड़ा क टाप सुनाइ पड़ेछ ।..... मंच आलोकित होइत अछि ।]

मोहिनी—माय ! माय ! [प्रवेश करैत अछि । आधुनिक वेशभूषा, मुदा कतहु उपता नहि अछि । मोहिनी क पाछू शुभंकर क प्रवेश । आधुनिक शहर क वेश-भूषा ।] माय ! [ककरहु नहि देखि] कतय गेल अछि सब कथो ? दीवान जी त कहलन्हि जे सब घरे पर छथि तखन.....।
शुभंकर—[गला क टाइ केँ कनेक ठीक करैत] अहाँ क ई सकान त राज-महले सन लगैछ ।

मोहिनी—राजमहल सन लागत की, राजमहले त थीक ।

शुभंकर—इज इट ? ई राजमहल थीक ? तखन—

मोहिनी—तखन की ?

शुभंकर—अहाँ, अहाँ राजकन्या ? [एहि बात पर मोहिनी हँसि दैत अछि] । नो नो, डोण्ट लाफ । टेक इट सीरियसली । यू सेड यू आर अ प्रिंसेस ! आइ मीन राजकन्या !

मोहिनी—हम किछु नहि कहलहुँ । एना नहि करु । एखनहि बाबूजी आबि जैताह !

शुभंकर—बाबूजी ? यू मीन राजा ? महाराजा ?

[राजा साहब प्रवेश क' कए मोहिनी केँ देखैत छथि । शुभंकर पोशाक ठीक - ठाक कर' से व्यस्त भ' जाइत अछि ।]

राजा—बेटी ! तौ आबि गेलह ? [उच्च स्वरें] अरे चतुरलाल, कतय छिहीं रौ, सामान सब टाल' जो । [शुभंकर पर नजरि पड़ैत] दिनका

चिन्हलियन्हि नहि ?

शुभंकर—[अगुआ कए] लेट मी इंट्रोड्यूस मिसेल्फ सर ! आइ एम शुभंकर.....शुभंकर पाठक । हम अध्यापन करैत छी । [कनेक रुकैत - रुकैत कहैत छथि] अ.....माने अहाँ क विषय मे मोहिनी सँ बहुत सुनलहुँ । [की करताह फुरैत नहि छन्हि । तँ हाथ बढ़ा कए] बेरी ग्लैड टु मीट यू सर.....आइ मीन !

राजा—[राजा हाथ नहि बढ़बै छथि । शुभंकर क बाजब -भूकब नीक जकाँ देखि रहल छथि] शुभंकर बाबू के थिकाह मोहिनी ?

मोहिनी—[बिहल शुभंकर कें देखि घबड़ा कए] माय जनैत छथि । चिट्ठी मे सब किछु लिखने छलहुँ । माय कतथ छथिन्ह ?

राजा—[मोहिनी क अन्तिम वाक्य क ख्याल बिना कौने अपन आसन दिसि जाइत - जाइत] ओ बुझलहुँ ।

मोहिनी—[शुभंकर क पास आवि मन्द स्वरें] पैर छूबि कए प्रणाम करू ने ! [कहैत-कहैत ओ महाराज क पैर छूबि, प्रणाम करैत अछि] ।

राजा—हाँ, हाँ ठीक अछि ! [शुभंकर क दिसि देखि कए] हिनका भीतर ल' जाहुन्ह अपन माय लग ।

मोहिनी—अच्छा बाबूजी ! [शुभंकर दिसि देखैत] चलू !
[चतुरलाल प्रवेश करैछ ।]

राजा—जाब ! सामान चतुरलाल कें द' दिथौक । ओ अहाँ कें रहबाक कमरा देखा देत ।

शुभंकर—नहि, नहि; ठीक अछि । भने त बैसल छी । [घबड़ा कए हँसि दैत अछि ।]

मोहिनी—त ठीक अछि । हम भीतर जाइत छी । अहाँ बाद मे आब ।
चलू खबास ! सामान सबटा भीतर ल' चलू ।

[मोहिनी क प्रस्थान । चतुरलाल माल नेने जाइत अछि । किछु क्षण निस्तब्धता रहैत अछि । शुभंकर एकटा अखबार सँ मुहँ

भाँपि कण बीच-बीच में राजा विसि देखैत पढ़बाक चेष्टा करैत अछि ।
 राजा गड़गड़ा क नल मुँह में लगौने तीव्र दृष्टिमें शुभंकर केँ आपादमस्तक
 देखैत छथि ।]

शुभंकर—[तेसर बेर राजा सँ आँखि मिल नेला पर] माने, पुरान अछि ।

राजा—[भौँ सिकोड़ैत] की ? महल ? [गड़गड़ा क नल हटा लैत छथि] ।

शुभंकर—नहि, आइ मीन ई पेपर; पेपर पुरान अछि ।

राजा—[किछु खिन्न भए] हूँ ! ई शहर नहि थीक । [पुनः गड़गड़ा क नल
 मुख में लगबैत छथि ।]

[शुभंकर अखबार केँ किछु सनटा - पुनटा कए राखि दैत छथि । पाकिट
 में किछु खोजबाक अभिनय करैत छथि; नहि पबैत छथि ।]

राजा—की खोजैत छी ?

शुभंकर—आँय ! नहि, किछु नहि । सूटकेस क चाभी ।

राजा—[किछु चिन्तित जकाँ] अहाँ की करैत छी कहने छलहुँ ?

शुभंकर—[नहि सुनैत] पासिवली मोहिनी क रिंग में हैत ।

राजा—हम से नहि पूछैत छी । अहाँ क प्रोफेशन की थीक ?

शुभंकर—ओ, प्रोफेशन ? प्रोफेसर, माने प्रोफेसर !

राजा—की पढ़बैत छी ?

शुभंकर—हम लिग्बिस्टिक साइन्स पढ़बैत छी ।

राजा—कोन साइन्स ?

शुभंकर—जी, लिग्बिस्टिक साइन्स । माने साइन्स आफ लॅंग्वेजेंज ।

[राजा केँ समझावै लगैत अछि] जकरा मैथिली में भाषा - विज्ञान
 कहैत छैक ।

राजा—[पुनः शुभंकर केँ निरीक्षण करैत] ओ !

शुभंकर—हमरा काज, आइ मीन थीसिस अछि चॉम्प्टिकयन थियोरी पर ।

हमरा क्वांटिटेटिव लिग्बिस्टिक्स बहुत पसिन्न.....

राजा—[बाधा दैत] ओ, अहाँ पी एच० डी० कँने छी की ?

शुभंकर—यस सर, एण्ड आइ हैव सबमिटेड ऐन ऐप्लिकेशन फॉर डी. लिट. ।

यद्यपि हम एतय डी० लिट० कर' नहि चाहैत छी । हम चाहैत छी
एकटा विदेश क डिग्री ।

राजा—ओ ! [मौन] अहाँ बिदेश जा रहल छी ?

शुभंकर—अफ कोर्स आफटर मैरेज । बियाह क बाद आ' सेहो मोहिनी क
संग ।

राजा—कत्तेक दरमाहा भेंटैत अछि कालेज सँ ?

शुभंकर—[घबड़ा कए, निरुत्साहित भए] सघा छ' सै ।

राजा—ओ ! [किछु काल चुप रहि कए] जाउ ! भीतर जाउ ।

[शुभंकर चुपचाप प्रस्थान-पथ क दिसि बढ़ैत अछि । बत्ती बन्द भ'
जाइत अछि ।]

चतुर्थ दृश्य

[दृश्य-सज्जा बदलि जाइत अछि । पाछाँ क चट नहि रहैत अछि । शय्या मे रांजकीयता क चेन्ह नहि रहैत अछि एवं शय्या मंच क मध्यभाग मे राखल रहैत अछि । उच्चासन क स्थान पर मंच क एक कोना पर बेदी रहैत अछि, जाहि पर कयो बैसि सकैत अछि । शय्या पर उपविष्ट सरमा आ' पाछाँ मे ठाढ़ मोहिनी क वार्त्तालाप सँ दृश्य आरम्भ होइछ ।]

सरमा—शुभंकर कतय गेलाह बेटी ?

मोहिनी—ओ खबास क संग गाम देखए गेल छथि ।

सरमा—बड़ नीक अछि । [मोहिनी लजा जाइत अछि] इयैह बात हम तोहर बाबूजी सँ कहलहुँ त ओ.....।

मोहिनी—ओ की कहलन्हि ?

सरमा—ओ कहलन्हि—अहाँ त जकरा देखैत छी तकरहि अपना जकाँ बुझैत छी ।

मोहिनी—हमरा हुनकहि डर छल जे ओ हमर एहि काज सँ प्रसन्न नहि हेताह ।

सरमा—धुर बताहि ! ओ तेहन किछु नहि कहलन्हि । तों त जनिताहि छें ओ बेसी किछु बजैत नहि छथि । तों एतेक सोचैत कियैक छें ?

मोहिनी—नेनहि सँ बाबूजी केँ तेहन ने गंभीर देखैत अयलहुँ जे डर होइत अछि माय ।

सरमा—हुनका मनैबाक भार हमरा ऊपर छोड़ें । शुभंकर नीक लड़का अछि, नीक घर क अछि, नीके कमाइत अछि । एहि मे आपत्तिक प्रश्न नहि । तों डर-भर छोड़ें आ देख—भनसिया ओँघाइत हैसैक । बेचारा शुभंकर केँ भूखो लागि गेल हैसैक । [मोहिनी प्रस्थानोद्यत

होइछ] ई राति के कियैक जे बहरैला !

मोहिनी—[जाइत-जाइत पाछाँ घूरि कए] हमहुँ मना कैने छलियनिह जे साँभ
कै नहि बहराउ । भोरके पहर टहल' लेल चलि जायब त ओ बात
हुनका नीक नहि लागलनिह । कह' लागलनिह—शहर मे त तारा सब
नजरियो नहि आबैत छल । एखन त आस मेटाब' दीय' । [कहैत-
कहैत प्रस्थान करैत अछि । सरमा एक टा पत्रिका पढ़' लागत छथि कि
मोहिनी पुनः प्रवेश क' कए केवाड़ी क पास सँ कहैत अछि] माय !
देख, के आयल छथि !

सरमा—के आयल अछि ? [कहैत द्वार दिसि देखैत छथि कि धनिक
लाल क प्रवेश होइत अछि ।]

धनिक—हम छी रानी मा ।

सरमा—अरे, धनिक तौ ? कहिया एलह गाम पर ? शहर मे सब ठीक-
ठाक छैक ने ?

धनिक—हँ रानी मा, अहाँ क आशीर्वाद सँ सब किछु ठीके चलि रहल
अछि ।

सरमा—तौ कत्तोक पैघ भ' गेलह । तोरा त पहिने हम चिन्हवे नहि कैलहुँ ।

धनिक—सब सैह कहैत अछि । आइये त अयलहुँ । एम्हर किछु दिन सँ
गामे पर रहबाक मन करैत अछि ।

सरमा—चलह । कयो त कहैत अछि जे गामे नीक लगैत अछि । नहि त,
शहर जा कए कयो गाम दिसि घूरियो कए नहि तकैत अछि । इयैह
मोहिनीये के देखह ने । हम सब नहि रहितहुँ त ओ गाम अबितै ?

धनिक—अरे हँ, ओहो त शहरे मे रहैत छथि । देखू त, हम एक दम
बिसरिये गेल छलहुँ । [किछु कालक पश्चात्] एखन एतय कियैक
छथि ? कालेज खूजल नहि छैक की ? कि बियाह क जोग छैक ?

सरमा—कालेज क छट्टी त पहिनहि भ' गेलैक । आ' बियाह द' सेहो ओ
सोचि रहल छथि ।

धनिक—अच्छा, अच्छा ! [बैसैत] चलो, गाम पर ऐलहुँ त बहुत दिनक बाद एकटा भोजो भेंटत ।

सरमा—[हँसैत] से देखह ! गाम पर बियाह होइत अछि वा नहि ।

धनिक—कियैक, कियैक ? गाम पर कियैक नहि हैतैक ? हम सब छी कधी लेल ? तेहन ने खटबैक बहिन दाइ क बियाह मे कि.....!

सरमा—तै नहि । लड़का शहर क अछि ।

धनिक—ताहि सँ की ?

सरमा—खाली सैह नहि । मोहिनी क बाबूजी चाहैत छथि जे थियाह शहर मे हो । ओतय चीज वास्तु क बहुत सुबिधा हैत । आर्थोजन आदि क नीक प्रबन्ध भ' सकत ।

धनिक—नहि रानी मा ! एतय सँ नीक व्यवस्था आब कत' हैत ? हमरा त मन नहि लागैत छल ओतय । बारह बरस कोना गाम छोड़ि कए बितौलहुँ से आश्चर्य ।

सरमा—तौ सत्ते ओतय नहि रहबह की ?

धनिक—एह, ओतय लोग रहैत अछि ? यद्यपि एक टा छोट-छीन मकानो बनौने छी । एक भाइ ओतहि अछि अपन परिवार नेने । हम अपन धीया-पूता ल' कए एतय आबि गेलहुँ । एखन ओतुका कारबार वैह चलाओत । एतय हम जमीन-जाल देखब ।

सरमा—मुदा तोहर और एक टा भाइ जे एतय रहैत अछि तकर.....।

धनिक—तकरा शहर पठा रहल छी पढ़वा-लिखवा लेल । एतय ने ओकर पढ़ाइ होइत अछि और ने ओकरा सँ जमीने-जाल ठीक तरहें देखल होइत छैक । आ' तकर अलावे एसीक जमीन पड़ल अछि । सब बेकारे ने ?

[मोहिनी क प्रवेश ।]

सरमा—से त ठीक बात ।

धनिक—ऐबा सँ पहिने एकटा ट्रैक्टर बुक कैने छलहुँ । सेहो आवितै हैत

रेलगाड़ी सँ। एतय आरौ जमीन सब लेबाक बिचार अछि।

मोहिनी—[धनिक क बात ध्यान सँ सुनि कए] तकर माने धनिक भाइ बहुत बड़का धनिक भ' गेलाह।

[एहि बात पर सब क्यो हँसि दैत छथि।]

धनिक—नहि, से बात नहि। ओतय बारह बरिस पहिने जे गेल छलहुँ, तखन मने मन इच्छा छल, वन्नत तरहेँ कोना खेती - बारी कैल जाइत अछि से सीखी। पहिने त पाइ कमबै मे लागलहुँ हम दुनू भाइ। जब बिजनेस चलै लागल.....

मोहिनी—कथी क बिजनेस अछि अहाँ क ?

धनिक—कपड़ा केर एकटा दोकान देने छी आ' बगले मे एकटा स्टेशनरी दोकान सेहो अछि।

सरमा—हँ, की ने कहैत छलह ?

धनिक—हँ, जखन बिजनेस ठीक-ठाक चलै लागल, तखन हम समय बचा कए ओतय एक टा एप्रिकलचरल इन्स्टिट्यूट मे.....

मोहिनी—हँ हँ, हम देखने छी। गोल घर क पास ने ?

धनिक—हँ, ताहि मे ई सब सिखलहुँ। देखैत छी तकरा काम मे लगा सकैत छी कि नहि।

सरमा—भगवान तोरा और देखु।

धनिक—हमर भगवान त अहीं सब छी रानी मा। नेता मे अहीं क आडन मे खेलायल छी। मा के त देखलहुँ नहि, मा केर स्वाद अहीं मे पौलहुँ। तैं गाम अबितहि सब सँ पहिने अहीं क एतय ऐलहुँ।

सरमा—नीक कैलह।

मोहिनी—अहाँ आइये आयल छी की ?

धनिक—आइये भोर।

मोहिनी—अहाँ केँ स्टेशन पर नहि देखलहुँ। हमहूँ सब त भोरके गाड़ी सँ आयल छी।

धनिक—हम टूने सँ नहि ऐलहुँ; अपन जीप सँ ऐलहुँ ।

मोहिनी—नहि, तखन त सत्ते अहाँ महा धनिक बनि गेल छी ।

धनिक—[हँसैत] से त बुझलहुँ, मुदा ई कहू 'हमहूँ सब' माने की ? के के ऐलहुँ ?

[मोहिनी किछु नहि कहि, सरमा दिसि तकैत अछि ।]

सरमा—शुभंकरो आयल अछि ।

धनिक—शुभंकर के ? नहि चिन्हलहुँ त !

सरमा—मोहिनी क भावी घर ।

धनिक—[आनन्द क भंगिमा मे] आँय ! सत्ते की ? तखन त हुनका स परिचय - पात करै पड़त । [मोहिनी केँ] कतय छथि ? बजा पठाउ हुनका ।

मोहिनी—बाहर गेल छथि टहलै लेल ।

धनिक—ओ हो ! तखन त आइ नहि भेल । कोनो बात नहि, जैह आइ सैह कालिह । [किछु मन पड़ि जाइछ] अरे हँ, देखू त । हम एकदम बिसरिये गेल छलहुँ ।

मोहिनी—की ?

धनिक—हमहूँ त तेहने ने छी जे.....। जाहि काज लेल ऐलहुँ, सैह बिसरि जाइत छलहुँ ।

सरमा—कोन काज ?

धनिक—अरे, हमर बेटा मुन्नू अछि ने ? ओह, अहाँ त नहि चिन्हैत छी ।

त सैह, कालिह ओकरहि जन्म दिन अछि । शहर मे त खूब धूम-धाम सँ जन्म दिन मनबैत छलहुँ । एहि बेरि हड़बड़ी मे बेसी किछु व्यवस्था नहि क' सकलहुँ । एक गोटे केँ पहिने पठा देलहुँ एम्हर सब व्यवस्था ठीक राखबाक लेल । आ' हम ओम्हर शहर सँ आबैत काल पन्नाबाइ केँ मुजरा क लेल कहने ऐलहुँ । ओहो त भोरके दून सँ आयल अछि ।

मोहिनी—तँ ने कहू । हम त भोर स्टेशन पर पन्नाबाइ केँ देखि कए सोचैत

छलहुँ जे की बात थीक ?

सरमा—तखन त तौ विशेष अवस्था कैने छह !

धनिक—नहि, हड़बड़ी मे जे भ' सकल । गाम क सब कन न्योत पठौने छी । अहूँ सब कारिह अवश्ये जायब । हम गाढ़ी पठा देब ।

सरमा—[एहि बात पर आनन्दित मुख कनेक गरभीर भ' जाइत अछि ।]

मुदा मोहिनी क बाबूजी त.....

धनिक—[बाधा द' कए] हुनको अवश्य कहबनिह । नेना मे हुनका दुर्गा पूजा क समय मे देखैत छलहुँ बड़का - बड़का उस्ताद सब सँ ठुमरी, गज़ल आ आलाप सुनैत । हुनका त अवश्य नीक लागतनिह पन्नावाइ क मुजरा ।

सरमा—से ओ पन्नावाइ क गीत सुनने छथि । गत वर्ष एतय ओकरे आनल गेल छल ।

धनिक—ओह ! पन्नावाइ एतय आबि चुकल अछि । तँ ओकरा मुँहँ राजा साहब क नाम सुनने छलहुँ । हम बुकलहुँ, ओ आन किनकहु द' कहि रहल अछि ।

सरमा—तँ.....ओ त भरिसक नहि.....

धनिक—त ठीक अछि । अहाँ हुनू अवश्य आउ । भरि गाम क जर-जनानी सँ ल' कए बच्चा - बूढ़—सब केँ बजौने छी । अहाँ सब नहि जायब त.....

सरमा—ठीक लैक, हम चेष्टा करब । मोहिनी क बाबूजी जौ जाय देखिन त/ माने.....आइ - कारिह त हम विशेष बहराइत नहि छी । तखन हँ, मोहिनी आ' शुभंकर केँ हम पठा देब ।

धनिक—अच्छा, त एबनि हम चलैत छी । अच्छा [मोहिनी केँ] त कारिह त शुभंकर बाबू सँ भेंट हैबे करत ।

[धनिकलाल क प्रस्थान ।]

मोहिनी—[धनिक क प्रस्थान - पथ क दिसि देखैत] माय ! मात्र हसरहि

सभ क नाम कियै कहलें ? [बाहर सँ महाराज क खखास सुनबा मे अबैत अछि । मोहिनी कनेक विचलित हैत] माय ! बाबूजी आवि रहल छथि ।

[सरमा अपना कें प्रस्तुत क' लैत छथि । राजा साहब क प्रवेश क संगे दुनू ठाढ़ भ' जाइत छथि ।]

राजा—सरमा !

सरमा—जी !

राजा—पल्लुआड़ मे ककर ने एकटा जीप ठाढ़ देखलहुँ—बाग मे टहलैत-टहलैत । कयो एतय आयल छल की ?

सरमा—हँ । धनिक आयल छल !

राजा—धनिक ? धनिक के भेल एहि गाम क ?

सरमा—अहाँ ओकरा एखन देखब त नहि चीन्हब । मुदा, अहाँ कें मन त हैत; एकटा बच्चा मेना मे एहि हवेली मे खेलैत छल—मोहिनी क संग.....पन्द्रह बरिस पहिने.....। बैह आयल छल ।

राजा—[चौंकि कए बात क बीचहि मे बाधा दैत] के ? लूटन क बेटा ?

मोहिनी—हँ; तकरे बेटा धनिक लाल ।

राजा—[कठोर स्वरें] ओ एतय कियैक आयल छल ?

सरमा—[मोहिनी किछु कहै जाइत अछि; सरमा मोहिनी कें बाधा द' कए] हम कहैत छी ओ कियैक आयल छल । [किछु काल मौन रहि कए] ओकर बेटा क काल्हि जन्म दिन थीक । तँ गाम क सब लोग कें न्योत देने अछि । और तँ, ओकर दुआरि पर काल्हि पन्नाबाइ क महफिल.....।

राजा—और ओहि नीच कुकुर क आङन मे जैबाक लेल अहाँ सब कें ओ हकार देब' आयल छल ?

सरमा—छि; ! जत्तेक दिन जा रहल अछि अहाँ और बदलल जा रहल छी ।

[मोहिनी क प्रति] तौ भीतर जा । [मोहिनी क प्रस्थान क बाद]

धनिक हमरा सब के न्योत देब' आयल छल; एहि मे कोन अन्याय अछि ?

राजा—हम न्याय - अन्याय नहि बुझैत छी । हम ओहि नीच वंश क कोनो लोक क छाया धरि नहि देख' चाहैत छी ।

सरमा—किन्तु कियैक ? ओ सब जाति सँ छोट अछि, तँ ? की अहाँ ओहि टोला क आन ककरहु घर बियाह - शादी क अवसर पर नहि गेल छी ? से जौ गेल होइक, तखन ई... : ...

राजा—[कनेक उच्च स्वरें] सरमा ! सब बात पर देखल नहि दियह । अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि जनैत छी । [स्वर बदलि कए, स्वाभाविक कण्ठें, दृढ़ रूपें] हम कहैत छी, नहि जाउ ओतय ।

सरमा—हम ओकरा नेना मे खेलौने छी; मोहिनी क संगे - संग ओ पैघ भेल अछि । तखन त अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि कहलहुँ । एहि पन्द्रह साल मे की एहन.....

राजा—पन्द्रह साल मे बहुत किछु भ' सकैत अछि सरमा । बहुत किछु भ' गेल अछि; बहुत किछु जानलहुँ अछि । तँ जखनहि लूटन क नाम लेलहुँ, मन मे घृणा क आगि पजरि छठल ।

सरमा—मुदा, धनिक क की अपराध अछि, से कियैक नहि कहैत छी ?

राजा—[क्रुद्ध भ' कए] धनिक क सब सँ प्रधान अपराध अछि जे ओ लूटन सनक नरक क कीट क बेटा थीक, और लूटन क सब सँ पैघ अपराध अछि जे ओ.....[कहैत - कहैत विकृत मुखें चुप्प भ' जाइत छथि ।]

सरमा—कौ !

राजा—[प्रस्थान करत - करैत] नहि, किछु नहि ।

[मंच अन्हार भ' जाइछ ।]

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[राजा साहब क कक्ष : कलाकारिता - पूर्ण पुरान ढंग क सामान सब सजाओल छैक । अलपालोक मे कनेक चिन्तित मुद्रा मे राजा बैसल छथि । विरंचि हुनका किछु समझा रहल छथि ।]

विरंचि—सरकार, सबटा जमाखर्च त अहाँ केँ द' देलहुँ । एखन एक बेर देखि लेल जाय ।

राजा—रहै दीय' दीवान जी ! अहाँ क हिसाब हम कहियो देखलहुँ जे आइ देखब ? तकर अलावे अहाँ एखन जे किछु पढ़ि गेलहुँ, से सब हम नहि सुनलहुँ । हम किछु दोसरे बात सोचि रहल छलहुँ ।

विरंचि—कोन बात सरकार ?

राजा—आइ तीन दिन सँ पन्नाबाई बिलासपुरे मे अछि । अहाँ जनैत छी ?

विरंचि—जी हँ, धनिक लाल महफिल बैसौने अछि ।

राजा—दीवान जी, अहाँ जनैत छी जे पन्नाबाइ जहिया अबैत अछि, हमरा एतय अबैत अछि ।

विरंचि—मुहा.....

राजा...पहिने हमर प्रश्न क उत्तर दीयह । अहाँ जनैत छी ?

विरंचि...हँ सरकार । किन्तु पूजा क एखन दस दिन बाकी अछि आ'.....

राजा...[किछु कठोर स्वरें] दीवान जी !

विरंचि...[कहैत - कहैत थम्हि कए] जी सरकार !

राजा...कालिह क भीतर नाच घर केँ सजा कए साफ करवा कए राखू ।

[कहैत - कहैत प्रस्थानोद्यत भ' कए] परसू पन्नाबाइ क महफिल
राजमहल मे बैसत ।

विरंचि—किन्तु सरकार, हमर बात त सुनल जाय ।

राजा—[प्रस्थान-पथ क पास सँ पाछाँ घूरैत] कहू !

विरंचि—[पास जा कए] मालिक, पूजा क त कैक दिन बाकी छैक ।

राजा—जनैत छी ।

विरंचि—सब किछु कीनल जा चुकल अछि । मूर्तियो समाप्तप्राय भ' गेल
अछि । आ एम्हर शहर मे जा कए अपनेक आज्ञानुसार एकटा नाटक क
दल केँ पाइ सेहो बैना द' कए एतय आनबाक व्यवस्था क' लेने छी ।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सेहो जनैत छी ।

विरंचि—[राजा क दिसि असहाय आँखियेँ ताकैत] सरकार, हमरा पास
जे किछु छल, सब किछु साफ भ' गेल अछि ताहि मे ।

राजा—अहाँ केँ जे कहबाक छल, भ' गेल ?

विरंचि—जी ? [हताश स्वरेँ] जी हूँ.....

राजा—मकान क बाकी हिस्सा केँ सेहो गिरवी राखि कए जतबा टाका
मिलत, ल' आनू । [जाइत-जाइत] और हूँ, नाचघर साफ करबा
लियह ।

[राजा क प्रस्थान । अन्हार भ' जाइछ ।]

—

द्वितीय दृश्य

[राज-भवन क अन्तःपुर]

विरंचि—एखन कहू त रानी जी, हम कोना कए ई काज करू ? नहि, नहि, हमरा सँ ई नहि हैत । हम बहुत सहलहुँ, किछु नहि कहलहुँ । सब जमीन-जाल जखन महाजन सभक अपेट मे गेल, तखनहुँ किछु नहि बाजलहुँ । मुदा, सम्पूर्ण राजमहल केँ गिरबी राखबाक अर्थ—आब एकदम किछु नहि रहत ।

सरमा—हम अहाँ केँ की कहू दीवान जी ? अहाँ त बाबू जी क समय सँ छी । सब त देखितहि छी । एक बेरि जे बस्तु जाइत अछि, से घूरि कए थोढ़वे आबैत अछि ?

विरंचि—और, एहि मे भेंटवे कतोक करत ? आधा मकान बन्हूकी रखबाक जे सूदि भेल अछि, तकरा धुरैबाक आइ धरि व्यवस्था नहि भेल अछि । से बाद द' कए महाजन और देबे की करत ?— किछु नहि ।

सरमा—हम सब त आत्महत्या क' लेब । किन्तु मोहिनी ? मोहिनी की करत ? ओकर त एखन धरि बियाहो नहि क' सकलहुँ जे.....
[कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि ।]

विरंचि—आ' हुनका त एहन अवस्था क विषय मे किछु कहलो नहि गेल छन्हि । एकटा परीक्षा द' कए आयल छथि । मुदा फाइनल परीक्षा त एखनहु बाकिये छन्हि । छुट्टी क बाद त ओ फेरो जाय चाहतीह । तखन हम कोन मुँहें कहब जे हमरा पास आब किछु नहि अछि ।

सरमा—एहि मे अहाँ क कोन दोष ? सब हमर कर्म क लिखल अछि । एखनहु और की की देख' पड़त, नहि जानि ।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

तृतीय दृश्य

[उद्यान क दृश्य । मंचक सम्मुख भाग मे एक कोन मे राखल बेदी पर मोहिनी बैसल अछि । पाछाँ शुभंकर ठाढ़ छथि । चारुकात सँ पक्षी सभक कलरव सुनल जाइत अछि । आलोक मात्र ओही दुनू गोटा पर पड़ैत अछि ।]

शुभंकर—द्रूली स्पीकिंग, अहाँ सभ क ई बिलासपुर हमरा सहित नीक लागि भेल ।

मोहिनी—[हाथ झुका कए नह खोघैत] हूँ ।

शुभंकर—हूँ की ? ऐम आइ रांग ?

मोहिनी—नहि । [कहि कए आँचल पर हाथ फेरै लगैत छथि ।]

शुभंकर—[सामने आवि कए] लूक मोहिनी, अहाँ एना चुपचाप बैसि कए हँ-नहि करैत रहब आ' हम.....की भेल अहाँ केँ ?

मोहिनी—हैत की ? अहाँ हमर गाम क प्रशंसा करैत छलहुँ, हम सुनैत छलहुँ ।

शुभंकर—अहाँ कि मात्र सुनबाक लेल हमरा एतय ई पोखरिक पास बजौने अयलहुँ ?

मोहिनी—जी हँ ।

शुभंकर—तखन कहू, की सुनै चाहैत छी ?

मोहिनी—अहाँ गाम क विषय मे त बहुत कित्हु कइलहुँ, गाम क लोक सब द' त कित्हु नहि बाजलहुँ ।

शुभंकर—गाम क लोक सब बहुत नीक छथि ।

मोहिनी—बस ?

शुभंकर—तखन आर की कहू हुनका..... [कित्हु सामझि कए] ओ !

आब बुझलहुँ अहाँ क प्रश्न ।

मोहिनी—[मुँह देढ़ करैत] हूँ, खूब बुझलहुँ ।

शुभंकर—गाम क आन सब लोग सँ क्यो - क्यो आरो नीक अछि, आरो सुन्दर—हमर सपनों सँ सुन्दर.....

[कहैत - कहैत अगुअबैत अछि ।]

मोहिनी—[शुभंकर केँ पाछाँ धकेलि कए, उठि कए] जाउ; अहाँ केँ कनेक छूट दीय' त अहाँ.....

शुभंकर—[हँसि दैत अछि] हमर कहब बेजाय लागल हैत थोड़ेवे ? मने-मन त अहाँ इयैह सुनै चाहैत छलहुँ । कहू, ठीक कि नहि ?

मोहिनी—बुझलहुँ । अहाँ सभ क मन क बात जानि जाइत छी ।

शुभंकर—सभ क नहि त अहाँ क मन क बात त अवश्ये जनैत छी ।

[मोहिनी पछुआ जाइत छथि । मंच क पश्च भाग पर आलोक पसरि जाइत अछि । एकटा पथ नजरि अबैत अछि ।] और जतबा क जानबा मे बाकी अछि, से कोहबर क राति क लेल छोड़ि देने छी ।

मोहिनी—[लजा कए] धत् ! अहाँ बड़ निर्लज्ज छी—असभ्य जकाँ ।

शुभंकर—[प्रसंग बदलैत] से त हम छीहे । [पाछाँ घूमि कए] कारण, जा धरि कोनो सभ्य देश क डिग्री नहि लटका सकी, ता धरि हमरा सन अध्यापक केँ असभ्ये बुझल जाइत छैक ।

मोहिनी—हम से कहलहुँ थोड़े ?

शुभंकर—अहाँ द' नहि कहैत छी । अहाँ क आँखि मे प्रेम क काजर अछि, मुदा दुनिया सैह बुझैत अछि । ओह ! हमरा पास बिलाइत क डिग्री रहिते, त हम थोड़ेवे कोनो कालेज मे सबा छ' रौ टाका क पद पर सड़ैत रहितहुँ; तखन त—

मोहिनी—अहाँ त कहने छलहुँ जे बैंक मे टाका जमा क' रहल छी ।

शुभंकर—अरे धत् - धत् ! पाँच - दस हजार सँ की हैत ? ओतबाक त पासपोर्ट बना कए ग्लेन क टिकट क दाम गनैते - गनैत स्वाहा ।

मोहिनी—तखन ?

शुभंकर—और एखन त अहाँ सँ बियाह क' कए तखनहि बाहर पढ़बा लेल

जायव। ताहि लेल चाही और पाइ। दस हजार टाका सँ की हैत ? मोहिनी—[किल्लु सोचि कए चलैत - चलैत अकस्मात् कहि उठैत अछि] एक टा काज कियैक ने करैत छी ? हम सब त बाबूजी सँ टाका ल' सकैत छी ।

शुभंकर—राष्ट यू आर ! जाहि दिन सँ हम एतय एलहुँ, ताहि दिन सँ इयैह सोचि रहल छलहुँ । सोचलहुँ जे अहाँ केँ पूछि ली—त अहुँ केँ वैह समाधान सूझल ।

मोहिनी—तकर अलावे अहाँ त पहिनहि कहने छलहुँ, अहाँ केँ आर किल्लु नहि चाही ।

शुभंकर—उहुँ हुँ हुँ ! अहाँ गलती क' रहल छी । पहिने त हम अहाँ केँ चाहै छी ।

मोहिनी—[कटाक्ष क' कए] फेर वैह सब बात !

शुभंकर—हम कोन अन्याय कहल ? जौँ राज-कन्ये नहि मिलल त आधा राज्यहि ल' कए हम की करब ? खैर, तखन अहीं पर भार रहल । एहि बिषय मे अहीं बाबूजी सँ बात क' लेब ।

मोहिनी—[हँसि कए] कियैक ? अहीं कियैक ने ?

शुभंकर—नहि बाबा ! हुनका देखितहि हमर कण्ठ सूखि जाइत अछि ।

आफटर ओँल, हम साधारण लोग छी, और ओ छथि राजा ।

मोहिनी—तखन हमरा सँ अहाँ केँ कियैक नहि डर लगैत अछि ?

शुभंकर—कियैक ? अहाँ सँ कियैक डर हैत ?

मोहिनी—बाह रे ! हम जे राजकन्या छी ।

शुभंकर—ओ ! [कहैत उच्च स्वरें हँसि दैत छथि ।]

[मंच अन्हार भ' जाइछ]

चतुर्थ दृश्य

[नाच-घर । घर क चीज-बीत सब विस्रस्त रूपें पड़ल अछि । मात्र एकटा भाड़ ऊपर सँ लटकि रहल अछि । दीवान जी आ' खबास अपना मे बातचीत क' रहल छथि ।]

विरंचि—जलदी-जलदी हाथ बला रौ ।

चतुर—एक नरस क धूरा एहि नाच-घर मे जमल अछि । एक गोटा सँ ई पार लागत ?

विरंचि—[दुःखपूर्ण कंठें] हँ ! एक तोही छेँ जे एहि घर केँ नहि छोड़लें । आन क्यो त एतबा दिन मे कतहु पढ़ा गेल रहतिहै ।

चतुर—[काज करैत-करैत] हम कोना पढ़ाव दीवान जी ? जावत धरि सरकार हमरा लाति सारि कए भगा नहि देथि तावत धरि त हम एतहि रहब ।

विरंचि—अरे एतय त तोरा पेट भरि खेनाइ धरि नहि भेटैत छौक आ दरमाहा क त प्रश्ने कोन !

चतुर—दरमाहा हमरा देताह कियैक नहि ? हमही कहलहुँ जे हमर त क्यो धीया-पूता अछि नहि; जे हमरा टाका क जरूरत हैत । टाका ल' कए की करितहुँ ? भनहि त टाका जमा भ' रहल अछि ।

विरंचि—[अस्फुट स्वरें] और ओहि टाका क आधा महाजन क संवूक मे आ' आधा पन्नावाइ क पायल क तर.....।

चतुर—किछु कहलहुँ की ?

विरंचि—कदैत छी जे तौं मूर्ख छें । तैं रहि गेलें एहि हवेली मे । नहि त...।

चतुर—हम त मूर्ख छी; बुझलहुँ । हमरा दरमहो नहि भेटैत अछि । सुदा, अहाँ कियैक एखनहुँ पड़ल छी दीवान जी ? अहूँ केँ त किछु नहि

भेटैत अछि ।

विरंचि—हमहूँ तेहने छी, पढ़ल लिखल मूर्ख !

चतुर—छोड़ू ओ सब मुन्शी जी ! [काज करैत-करैत बजैत अछि] हमर बाबू एहि महल क नोन कम खेलन्हि ? तकरहि दाम हम सब नहि चुका सकलहुँ । तँ, हम भरि जिनगी खटियो कए दिनका सभ क कर्ज नहि बतायि सकब । [काज रोकि कए] तखन, जतबा दिन जिवैत छी, जतबा दिन लिखल अछि ततबा दिन खटवे करब । नहि त नरकहु मे हमर स्थान नहि हैत ।

विरंचि—कियैक ?

चतुर—महाराज क माय, बड़की महारानी हमर बाबू जी केँ रास्ता सँ उठा कए घर मे राखलन्हि, खुऔलन्हि आ' पोसलन्हि । बाबू जी तखन एक दम छोट बच्चा रहथि । मरबो केर पहिने बाबू जी हमरा सबटा कथा सुनौने रहथिन्ह । [किछु काल ठाढ़ रहि कए फेरो कर्म-रत भ' जाइछ ।]

विरंचि—और ओहि बंश क आइ ई हाल ? जे सब आश्रित छल, पंडित, कवि, गायक, कलाकार, गुणी, सब केँ एक-एक क' कए जाय पड़लन्हि । सब केँ हाथ जोड़ि कए महल सँ विदा कैल गेल । किन्तु हमरहु सभ क विदा हैबाक दिन लगिचा रहल अछि ।

चतुर—से कियैक ?

विरंचि—महल क उत्तर भाग जे पहिने गिरबी राखल गेल छल, तकर सूदे क थाह नहि—असल त दूर जाओक । और जे किछु बाकी छल तकरहु स्वाहा क' कए आवि रहल छी ।

चतुर—से की ? ई हाल भ' गेल अछि एहि महल क ?

विरंचि—त कहैत की छियह ?

चतुर—[काज बन्द करैत] तखन ताहि पर ई महफिल कियैक बैसि रहल अछि ?

विरंजि—तैं त तोरा सूख कहैत छियह । ओहि मुजरे क पाछाँ त पूरा महल गेल हाथ सँ ।

चतुर—मुदा, पन्नावाइ क मुजरा त ओहि टोला मे धनिक लाल क ओतय आइ तीन दिन सँ लोग सुनबे कैलक । तखन फेर कियैक ?

विरंजि—नहि बुझलिहीं ? तीन दिन सँ लोग सुनलक—तैं त फेरो भ' रहल अछि एतय । एहि हवेली क पाइ शेष भ' गेलैक अछि, तैं कि अभिमानो समाप्त भ' गेलैक ?

चतुर—हे भगवान् ! आबहु सरकार कें सुबुद्धि दियन्हु । एना त आब बेसी दिन नहिये चलत ।

विरंजि—इ त तैयो भाग अछि जे जत्तेक सोचने छलहुँ, ताहि सँ बेसी टाका भेंटल अछि ।

चतुर—से कोना ?

विरंजि—बैह धनिके क पास गेल छलहुँ । ओ त एतति खेलायल-धुपायल छल—एहि ठामक सब किल्ल ओकरा बुझले छैक । आन कोनो महाजन वा बजार पर क साहू सब त एहि हवेली क लेल एकर आधो नहि देतिहै । मुदा, धनिक कें हम सबटा बात समझा-बुझा कए कहलियैक, तखन ओ दस हजार टाका बाहर कैलक ॥

चतुर—ओ नीक लोक अछि । हम जनैत छी । और सबटा त गिद्ध थीक गिद्ध । सदिखन लूपकबाक लेल तैयार रहैत अछि ।

विरंजि—ओकरा त सब बातक पता नहि छलै । जखन हम कहलियैक जे कोना महाजन सूदिक टाका क लेल तगादा क' रहल अछि, तखन ओ बाजल जे एकरा वन्द करबाक एकेटा उपाय अछि ।

चतुर—से की ?

विरंजि—बैह रामचन्द्र सेठ सँ महल क बाकी हिस्सा क दस्तावेज आदि कीनि लेत । तखन त फयो तगादा नहि करत ।

चतुर—ओह ! भरिसक तैं सरकार हमरा आइ दुपहरि क समय धनिकलाल

कें आब' लेल खबर देबै कहलन्हि ।

विरांचि—हम त इयैह सोचैत छी जे चलू, ज्यो त हवेली क नीक चाहैबला
मेदल अछि ।

चतुर—ई हम अहाँ कें कहि दैत छी दीवान जी, जौ ज्यो हवेली क नीक क'
सकैत अछि त ओ थीक धनिक लाल ।

[बत्ती मिझा जाइछ ।]

—

पंचम दृश्य

[मंच-सज्जा सँ राजा साहब क कक्ष उद्भासित होइछ । अन्हारे मे दरवाजा दिमि सँ एकटा जीप एवाक आवाज सुनबा मे अबैछ ।]

राजा—[उच्च कंठे] चतुर, देख त के आयल ।

चतुर—[नेपथ्य सँ] जाइ छी सरकार । [एहि बीच राजा साहब उठि कए अपना के प्रस्तुत क' लैत छथि । तावत् चतुर धनिक केँ ल' कए प्रवेश करैछ ।] सरकार, धनिक लाल एलाह । [चतुर क प्रस्थान । राजा साहब पाछाँ घूरल छथि ।]

धनिक—गोड़ लगैत छी, सरकार ।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] हमर उपहास क' रहल छह ?

धनिक—[विस्मय क मुद्रा मे] जी ?

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सुनलहुँ तौ बहुत मातबर भ' गेल छह, बहुत पाइ जमा कैने छह !

धनिक—[विनय-पूर्वक] सब अपने सभ क आशीर्वाद सँ ।

राजा—हुँ ! [बैसैत छथि आ तम्बाकू पिबैत छथि ।]

धनिक—किछु देर धरि असहाय जकाँ ठाढ़ रहि कए तकर बाद] अपने हमरा बजौने छलियैक ?

राजा—[बिना देखनहि] हँ ।

धनिक—कहल जाय, कोन सेवा क' सकैत छी ?

राजा—[गड़गड़ा क नल मुँह सँ हटा कए] बैसह । [धनिक सामने राखल आसन पर बैसि जाइत अछि । राजा साहब हँसि दैत छथि ।] हाय रे जमाना !

धनिक—[नहि सुनैत] जी, हमरा किछु कहलहुँ ?

राजा—आइ सँ बीस बरस पहिने तों जतय बैसलइ, ततय तोहर बापो
बैसबाक साइस नहि कैने छल, जनैत छह ?

धनिक—[हँसैत] जी, मन त नहि अछि, तखन हँ, बूढ़-पुरान तेहने किछु
कहैत छथि । मुदा से त बीस बरस पहिलुका.....।

राजा—[बात पर जानि-बूझि कए ध्यान नहि दैत] सुनलहुँ, पन्नाबाइ तीन
दिन सँ तोहर दुआरि पर महफिल जमौने छल !

धनिक—जी, हमर बेटा क जनम-दिन छलक ।

राजा—तोरा ई गीत सुनबाक शौक कहिया सँ भेल छह ?

धनिक—जी, शौक नहि । तखन, समय भेटैत अछि त.....।

राजा—काल्हि सन्ध्याकाल समय हैतह त आबि जैह । काल्हि पन्नाबाइ
राजमहल मे मुजरा पेश करत ।

धनिक—[आश्चर्य सँ] जी ! राजमहल मे ?

राजा—कियैक ? एहि मे आश्चर्यित हैबाक कोन गप्प सुनलह ?

धनिक—[चबड़ा कए] नहि, माने पन्नाबाइ पहिनहि कहने छल जे ओ
आइये शहर घुरि जायत; तँ !

राजा—पन्नाबाइ घुरि जायत ? विलासपुर सँ ? राजमहल मे बिना ऐने ?
[उत्तेजना केँ दम्भ सँ दमन करैत] कोना सोचलह ?

धनिक—जी से त ठीके, से त ठीके ! मुदा, एखन पूजा क अनुष्ठान त
आबिये भेल अछि । तकर पहिने पन्नाबाइ केँ आनबाक खर्च त....।

राजा—[बाधा दैत] एखन तों जा सकैत छह ।

धनिक—जी ? [विस्मय । किछु काल बाद] जी !

[बत्ती मिझा जाइछ ।]

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[महफिल । उपस्थित केवल दीवान जी आ' धनिक लाल । एकटा विचित्र रोशनी बीच सँ चारुकात विकीर्ण होइछ । दू दिसि दूटा बिछौना, मसलन आदि ओछाओल छैक । बीच मे पन्नाबाइ क बैसबाक जगह तैयार अछि । ओतय सारंगी आ' तबला धरल अछि ।]

धनिक—मुदा, अहाँ हमरा कहने छलहुँ जे महल क अवस्था एकदम बिगड़ल अछि । संचय क परिमाण प्रायः निःशेष भ' गेल अछि ।

विरंचि—हम त ठीके कहने छलहुँ ।

धनिक—और तँ हमहुँ आइ जखन बजार पर गेल छलहुँ तखन राम चन्दर सेठ सँ हबेली क बाकी हिस्सा क विषय मे बातो कैने छलहुँ । किन्तु...

विरंचि—[बाधा दए] ओ की कहलक ?

धनिक—ओ त साम्रह तैयार भ' गेल । लागल जेना ओकर पिंड छूटि गेल हो !

विरंचि—हैत कियैक नहि ? ओ जनैत अछि जे ओना ओकर टाका घूरि कए आबि नहि सकैत अछि । और सरकार जावत धरि छथि, ओकरा ईहो साहस नहि हैतैक जे कचहरी जायत ।

धनिक—असल मे, एहि महल क त एखन कोनो दाम नहि हैत । जे किछु दाम अछि, से एहि जमीन क । नहि त क्यो एहि मकान क लेल टाका थोड़ेवे देत !

विरंचि—एहि जमीनो क की खूब बेसी दाम हैत ?

धनिक—अवश्य । एक दिन त हैवे करत और ओ दिन बेसी दूर नहि अछि । ओ सेठ त मूर्ख अछि; तँ कइलक आइ-काहिह, जहिया इच्छा हो, कागत-पत्तर ल' लियह; मात्र टाका टा बापिस आबि जाओक ।

विरंचि—[सोचैत] मुदा, सूदि आ' असल मिला कए महल क आघे हिस्सा क जत्तेक ने टाका भ' गेल छैक आ' ताहू पर अहाँ जत्तेक देलहुँ—ततबा कि कहियो एहि जमीन क दाम हैत ?

धनिक—[हँसैत] दीवान जी, अहाँ बहुत सोभ लोक छी । ई दुनिया घूमि रहल अछि स्वार्थ क बल पर । क्यो स्वार्थ बिना एको डेग नहि चरैत अछि कतहु ।

विरंचि—से त बूझल । मुदा अहाँ क ई महल किनबा मे कोन स्वार्थ अछि ? एक ने एक दिन महल नीलाम हैवे करतिहैक । ताहि मे अहाँ केँ एतना टाका नहि गनै पड़तिहै । जौ महले किनबाक स्वार्थ हैतिहै, त अहाँ तहिना कीनतहुँ ।

धनिक—[मृदु हँसि कए] तखन अहाँ की सोचैत छी जे हम एकदम निः-स्वार्थ भए.....

विरंचि—से हम कतय कहलहुँ ? तखन अहाँ क मन मे एहि महल क प्रति अवश्य कतहु स्थान अछि ।

धनिक—[कनेक उदास भए] से त ठीके । स्थान अवश्ये अछि—तखन महल क नहि, रानी मा क, जनिक मुख नेना मे हमर बितु देखल माइ क मुँह सँ एकदम मिलि जाइत छल ।

विरंचि—ओ; से बात अछि ?

धनिक—बाद मे महल क दहिन दिस क बड़का हाता मे एक छोट-छीन कारखाना बैसैवाक अछि जतय हजारों लोक काज करै । ई हमर बहुत दिन क सपना थीक ।

विरंचि—एहि इलाका मे जौ तेहन एकटा कारखाना भ' जाय त उद्वारे भ' जाय ।

निक—दीवान जी, दारिद्र्य की थीक से हम देखने छी । हमरा मन अछि जखन वर्षा बरसैत छल, हमर घर क छप्पर मे असंख्य भूर भ' जाइत छल आ' हम गनैत छलहुँ जे कत्तोक भूर अछि—एक, दू, तीन, चारि, पाँच । सैह गनैत गनैत बड़ भेलहुँ कि इठात् एकदम असहाय भ' गेलहुँ । तखनहि रानी मा अपना शरण मे ल' लेलनिह । मड़ैया और महल क बिपर्यय हमरा मे अनेक रंगीन सपना भरै लागल । हम बुझैत छी जे बिना अर्थ, बिना खाद्य और बिना सपना मनुक्ख कत्तोक असहाय भ' जाइत अछि । [स्वर बदलि कए] दीवान जी, अहाँ भार लेब ओहि कारखाना क ?

बेरंछि—नहि धनिक लाल, हमरा सपना नहि देखाब । एहि महल क अर्थी पर ठाढ़ भए हम.....नहि नहि ।

[बत्ती भिम्मा जाइत अछि ।]

द्वितीय दृश्य

[राजा साहब क कक्ष । मंच क अग्रभाग से मद्धिम आलोक क प्रकाश मे मंच क बाम दिसि राखल एकटा वेदी आ' एकटा उच्चासन लखा दैत अछि । वेदी पर अतरदान राखल अछि । आसन पर बैसल राजा साहब अपन मौँछ मे अतर लगा कए अतरदान राखि कए उठैत छथि ।]

राजा—[शौर पाड़ैत छथि] चतुर, चतुर !

खतुर—[नेपथ्य सँ] ऐलाहुँ मालिक !

राजा—जल्दी आवें । [स्वगतप्राय] ओम्हर पन्नावाइ वैसल हैत महफिल मे । [मदिरा आ' पान-पात्र नेने चतुर क प्रवेश ।] अनलें ? राख ओहि ठाम । [चतुर वेदी पर सब चीज राखैत अछि ।] आ' सुन, महफिल मे ओ सब आवि गेल छथि ?

चतुर—हँ मालिक ।

राजा—ठीक अछि । आ' ओ लूटन क बेटा सेहो आयल अछि ?

चतुर—जी हँ, ओहो आवि गेल छथि । दीवान जी सँ बातचीत करैत छलाह ।

राजा—बेस । तों जो । [चतुर प्रस्थानोद्यत] आ' सुन हमरा द' कयो पुछतौक त कहि दिहें जे आवै छथि ।

चतुर—अच्छा सरकार ! [निष्क्रान्त भ' जाइछ ।]

[राजा पान-पात्र मे मदिरा ढारि कए पीबा लेल उद्यत होइत छथि । सरमा प्रवेश क' कए शान्त भ' कए देखैत छथि । एक गिलास पीबि कए जखन राजा दोसर गिलास मे मदिरा ढारै छथि, तखन सरमा अगुआ कए आवैत छथि ।]

सरमा—अहाँ केँ मन अछि, अहाँ क वयस कसोक भेल अछि ?

राजा—[पाछाँ दिसि धूमि कए] सरमा ? [कहि कए हँसैत छथि] ।

सरमा—अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ !

राजा—वयस बरस-मास-दिन सँ नहि जोड़ल जाइत छैक सरमा ।

सरमा—अहाँ क वयस पचपन पोर क' गेल अछि ।

राजा—मात्र पचपन ? [हँसैत छथि] । किलु नशा चढ़ल छन्हि] हम बुझलहुँ
पचहत्तर क आस-पास हैत । से जे हो, मुदा अहाँ हमरहुँ सँ बूढ़ भ'
गेलहुँ ।

सरमा—अहाँ निसा मे छी ।

राजा—नहि रानी; एकर साध्य की जे हमरा नशा आबि जाय ? नशा त
संगीत मे आओत, राग-रागिणी क आलाप मे आओत । [कहैत-कहैत
प्रस्थानोद्यत होइत छथि ।]

सरमा—[पास आबि कए] मुदा अहाँ सँ हमरा बहुत किलु कहबाक छल ।

राजा—कहबाक लेल काहि' भरि दिन रहत । एखन हमरा जाय दीय' ।

सरमा—[राजा कें रोकैत] नहि, आइ हमर बात अहाँ कें सुनै पड़त ।

राजा—[खौंभाइत] आह; सरमा ! की नेनपन आरम्भ कैलहुँ ?

सरमा—[व्यथित स्वरें] अहाँ सदखन अपनहि इच्छा पर जीवैत छी ।

मोहिनी सब दिन बाहरे रहैत अछि और एहि बिशाल द्वैली मे एक-
दिसि हम पड़ल रहैत छी । अहाँ गत दस बरिस मे एकहुँ बेर धूमियो
कए ताकलहुँ हमरा दिसि ? कखनहु पुछलहुँ—सरमा, अहाँ कें की
चाही ?

राजा—[पाछाँ घुरैत] ओह, एखनहि अहाँ कें कोन वस्तु क प्रयोजन पड़ि
गेल ? ठीक अछि, हम दीवान जी कें पठा दैत छी । अहाँ हुनका
समझा-बुझा.....

सरमा—[बाधा दैत] नहि; हम दीवान जी सँ नहि, अहाँ सँ चाहैत छी ।

राजा—[खौंभाइत] की चाहैत छी ?

सरमा—अहाँ कें चाहैत छी ।

राजा—तकर माने ? ई की शुक्र कैलहुँ आइ ? साफ - साफ बाजू, की चाही ?

सरमा—अहाँ कि बुझैत नहि छी जे अहाँ जाहि पथ पर चलि रहल छी, ओहि पथ पर ध्वंस छोड़ि आन किछु नहि अछि ? [कनसुँह जकाँ] अहाँ राजा छी । अहाँ केँ जगह - जमीन - महल आदि बहुत सम्पत्ति अछि । मुदा हमर एकमात्र सम्पत्ति थिकहुँ अहाँ । हम अहाँ केँ एहि निश्चित ध्वंस क पथ सँ घुरबै चाहैत छी ।

राजा—[हँसैत] बाह सरमा, बाह ! लगैत अछि, आइ पन्चीस बरिस पहिलका कोनो राति थीक । [गम्भीर भ' कए] अहाँ कत' घूर' चाहैत छी सरमा, हमरा कत' ल' जायब ? [पुनः आसन क पास जा कए पान-पात्र हाथ मे ल' कए] अहाँ सब मरि गेल छी सरमा । [मदिरा ढारैत] अहाँ, दीवान जी, चतुर—सब क्यो । प्रतिपल अहाँ सब मृत्यु क पद-ध्वनि सुनि रहल छी । प्रत्येक मुहूर्त अहाँ मरैत छी आगामी मृत्यु क डरें । [पान-पात्र हाथ मे ल' कए ठैत छथि ।] जीबाक हो त हमरा संग चलू । [घीवैत छथि ।]

सरमा—हम निस्सन्तान रहितहुँ त अपन स्वामी क, अपन सोहाग क भीख अपनहि स्वामी सँ नहि माँगै अबितहुँ । अहाँ केँ कखनहु भविष्य क चिन्ता रहैत अछि ?

राजा—के भविष्य क चिन्ता क' कए लाभ उठौलक रानी ? क्यो नहि । अहाँ क पिता कि भविष्य क चिन्ता क' कए हमर हाथ मे अहाँ क हाथ सौँपलन्हि ? हमर परम पूज्य पितृदेव की हमर भविष्य केँ सुदृढ़ बनेबाक लेल नारी, नृत्य आ नग्नता क पाछाँ सबटा सम्पत्ति उड़बैत गेलाह ? अहाँ क मोहिनी कि भविष्य क चिन्ता करैत ओहि अभ्यापक केँ पसिन कैने अछि ? जौँ कैनेहुँ हैत त भूल कैलक । भूल कैलक ओ । भविष्य मे पछिलका सब सपना हेरा जायत । जे किछु थीक, जौँ किछु अछि से थीक वर्तमान ! [पान-पात्र केँ हाथ मे मरोड़ने] आ' एखन पन्नाबाइ

हमरा लेल प्रतीक्षा क' रहल हैत । [राजा पान-पात्र हाथ से नेने
 प्रस्थान करैत छथि । सरमा एसगर मंच पर ठाढ़ कानैत रहैत छथि ।
 बस्ती मिम्मा जाइछ । अन्हार से संगीत क सुर भासल अबैत अछि;
 संग से सारंगी आ' तबला क सहयोग ।]

तृतीय दृश्य

[नाच घर । प्रकाश हैवाक बाद मंच क पश्च भाग पर लखा दैत छथि राजा, धनिक लाल आ' पन्नाबाइ । पन्नाबाइ दर्शक क दिसि पीठ कैने मंच क एकदम अग्रभाग मे गीत गाबि रहल अछि । पन्नाबाइ बहुमूल्य पोशाक मे अछि । ओकर दुनू दिसि सारंगी आ' तबला वादक छथि । गहा क एक दिसि राजा आ' दोसर दिसि धनिक लाल बैसल छथि । राजा क पाछा दीवान जी ठाढ़ छथि । धनिक लाल क पास आज्ञा क लेल प्रतीक्षारत चतुर । गीत क बीच मे प्रकाश बढ़ैत अछि । दर्शक केँ पन्नाबाइ क हाथ क मुद्रा देखाइ पढ़ैत छन्हि । बीच-बीच मे राजा वाह-वाही दैत पीबैत छथि । राजा राजकीय पोशाक मे छथि । धनिक अधिकांश समय राजा केँ देखि रहल अछि । पन्नाबाइ क गीत समाप्त होइछ । राजा दोसर गीत क लेल फरमाइश करैत छथि । गीत चलैते काल टाका आ' अशर्फी क थैला केँ अपन आसन लग सँ ठेलि कए पन्नाबाइ दिसि बढ़बैत छथि । पन्नाबाइ ओकर उपेक्षा करैत धनिक लाल क दिसि देखि कए मुसकिया रहल अछि । धनिक लाल भावावेश मे छथि । ई देखि राजा क्रुद्ध भ' जाइत छथि । संगहि हुनक भ्रू-भंग होइत छन्हि । गीत बन्द भ' जाइत अछि ।]

राजा—धनिक लाल ! [धनिक मूड़ी उठा कए राजा दिसि ताकैत अछि]

ई कोनो बाजारी कोठा नहि थीक जे तौ पन्नाबाइ क दिसि.....

धनिक—[किंचित् मत्त जकाँ] जनैत छी; ई राजमहल थीक । [व्यंग्य]

मुदा, गीत कियैक बन्द भेल ? [घूमि कए] पन्नाबाइ !

राजा—[क्रुद्ध स्वरें] नहि । पन्नाबाइ गीत नहि गाओत ।

धनिक—अपने हमरा गीत सुनबाक लेल निमन्त्रण देने छलहुँ कि नहि ?

राजा—हम भूल कैने छलहुँ । हमरा पहिनहि बूमव उचित छल—तौ की

बुभुक्षुह राजदरबार क अदब ?

धनिक—[विचित्र जकाँ हँसैत] वाह रे बाह ! हम कोन जेअदबी देखा-ओल ? [हँसैत अछि आ' एकहि वाक्य क पुनरावृत्ति करैछ । उठि कए ठाढ़ होइत अछि ।]

राजा—पन्नाबाइ ! अहाँ जाउ, आइ विश्राम करु । [पन्नाबाइ चलि जाइत अछि । धनिक तकर प्रस्थान-पथ क दिसि देखैत अछि और तकर बाद राजा क दिसि तकैछ । राजा प्रस्थानोद्यत होइत छथि ।]

धनिक—[हँसैत] माफ करब महाराज ! [राजा घूरि कए देखैत छथि ।]
वेचारा हमर प्रश्न बिनु जवाबे क राति भरि जागल रहत । हमर दोष त कनेक कहल जाय जे पश्चात्तापो करी !

राजा—तोरा सँ बातो करैत हमरा घृणा होइत छह ! [कहबाक साथे धनिक केँ ई बात लगैत छैक ।] ई हमर दुर्भाग्य थीक जे आइ तोहर संग एक आसन पर बैसि कए पन्नाबाइ क मुजरा सुनै पड़ल । जाहि आमन पा ठाढ़ भ' कए तों भाव-विभोर भ' रहल छह, ओकर एकटा सूतो छूबाक योग्यता तोरा मे नहि छह ।

धनिक—[क्रोध केँ प्रकट बिना कैने] माफ करब सरकार, ओ त भेल योग्यता क दोष, हमर की दोष अछि ?

राजा—[किछु काल धनिक क दिसि देखैत छथि । तकर बाद टहलैत कहैत छथि ।] और ई तोहर असीम भाग्य छह जे आजुक राति बीस साल पहिलका कोनो राति नहि थीक !

धनिक—से त हमर सौभाग्य क बात कहल गेल सरकार ! मुदा, हमर दोष क बात त नहि कहल गेल !

राजा—धनिक लाल ! हृद सँ आगौं नहि बढ़ी ! तों बिसरि गेलह जे कतय ठाढ़ भ' कए ककरा सँ बात क' रहल छह !

धनिक—[टहलैत] हम किछु नहि बिसरल छी सरकार ! हम एखन बिलासपुर क भूतपूर्व 'राजा' अभिमान कुमार देव सँ बात क' रहल छी

राजमहल क राचघर क शून्य महफिल मे ठाढ़ भ' कए । [थन्हि कए]
और हम ईहो नहि बिसरल छी जे हम एतय निमन्त्रित भ' कए आयल
छी और ईहो हमरा स्मरण अछि जे अपने हमरा सँ बात करैत संकोच-
बोध करैत छी ।

राजा—संकोच नहि घृणा, तीव्र घृणा ! जाहि घृणा क कोनो आदि नहि,
अन्त नहि.....

धनिक—[आहत अभिमानें] मुदा, कियैक सरकार ! हम त अपने क
दिसि सहायता क हाथ बढ़ौने छी; हाथ बढ़ौने छी अपने क चरण क
दिसि—एहि लेल नहि जे अपने जमीदार छलहुँ, एही लेल जे अपने
हमरा सँ श्रेष्ठ छी । [स्वर बदलैत] मुदा, अपने हमर बढ़ायल हाथ
क आगाँ एकटा दीवार ठाढ़ क' देने छी । कियैक ? हमर कोन दोष
अछि ? पन्नाचाइ क दिसि देखला सँ एत्तेक बिशाल देवार नहि ठाढ़
भ' सकैत अछि.....

राजा—वस ! बन्द करह अपन वस्तुता ! हमर सहायता क लेल एतय
आयल छह ? [उच्च स्वरें हँसैत छथि ।] हम सब किछु जनैत छी,
सब किछु बुझैत छी । हम जनैत छी, तौ कियैक ऐलह ।

धनिक—कियैक ?

राजा—तौ ऐलह इयैह देखबाक लेल जे बिलासपुर क भूतपूर्व राजा क रोजत्व
कत्तेक बाकी छैक । तौ इयैह नापबाक लेल आयल छह जे अपमान क
कत्तेक गहीर पोखरि हमर मृत्यु क लेल यथेष्ट अछि । मुदा ई जानि
जाह, तोरा सबक ओहि आशा क पूर्ति नहि हैतह । हम एखनहु
समाप्त नहि भेल छी । तौ की हमर सहायता करबह ? तौ, जकर बाप
क्रहियो हमर पैर क नह क दिसि ताकि कए बात नहि क' सकल ?

धनिक—माफ करब सरकार । बुझलहुँ, हमर पेनाइ हमर दोष भेल छल ।

मुदा, ताहि लेल हमर पिता क आत्मा केँ कियैक.....

राजा—[प्रचंड स्वरें हँसि-हँसि कए] अरे, के कतय छें रौ, मुनैत जो—

धनिक लाल क पिता' छल और तकर आत्मो छल !

धनिक—माफ करब सरकार। हमर पिता एक साधारण लोग छलाह और हमहू एकटा साधारण लोग छी। मुदा, तँ हुनका ल' कए ठट्ठा कैने हमरा नीक नहि लागत। ओ नैह छलाह, हमर अपन लोग त छलाह, हमर अपन बाबू !

राजा—[और जोर सँ हँसैत, मातल जकाँ] बाहू रे लूटन, तोहर जनम सार्थक छौक जे एहन धनिक बेटा पौलें ! [हँसी रोकि कए] धनिक लाल, तोहर मन मे अपन पिता क पितृत्व पर एतौक विश्वास छह—
आँय ? [व्यंग्य सँ आँखि बड़-बड़ करि कए देखैत रहैत छथि ।]

धनिक—सरकार, अपने हमरा सँ पैब छी—अपने हमर पितृतुल्य छी.....

राजा—[पुनः हँसैत] पि-तृ-तु-ल्य ! जकर पिता क पता नहि, तकर पितृ-तुल्य छी हम ? [हँसैत रहैत छथि]

धनिक—[उच्च स्वरें चीत्कार करैत] सरकार ! [पास आबि कए हाथ पकड़ि लैत छनिह] ई अपने की कहि रहल छी ?

राजा—[हाथ क वेग तखनहुँ जारी अछि । हाथ छोड़ा कए] कहबह की ? जे सत्य थीक, सँह कहैत छियह ! मुदा तोरे टा एहन अवास्था नहि भेलह । [कपट दुःख प्रकट करैत] बेचारा लूटन—तों जकरा पिता जनैत छलह ! ओकरा की भरि जिनगी अपन पिता क खोज भेंटलैक ?

धनिक—[प्रचण्ड क्रोध राजा क हाथ पकड़ि कए चीत्कार करैत-कहैत अछि]
सरकार ! बन्द करू, बन्द करू एहि घृणित प्रसंग केँ । [राजा क हाथ छोड़ि कए मंच क सामने अगुआ कए हुनू हाथ सँ मुँह भाँपि लैत अछि] ओह ! प्रत्येक शब्द जेना धीपल, लाल लोहाक सुलफा हो । [पाछाँ घूमि कए] के कहलक अपने केँ ई सब बात ? तकर नाम कहू.....।

राजा—[प्रत्येक शब्द क धीरे-धीरे उच्चारण करैत] तकर नाम सुनि कए की हैतह ? ओकर नाम क सन्धान करह जकर खून सँ तोहर देह क

प्रत्येक अंग पवित्र भ' रहल छह !

धनिक—के थीक ओ ? [राजा के निरुत्तर देखि हुनक हाथ पकड़ि कए]

कहू ओ के छल ?

राजा—हाथ छोड़ह । [धनिक छोड़ि दैत अछि हुनक हाथ] बेचारे लूटन क

माय—सुनैत छी, बहुत सुन्दर छल—ओकर दुर्भाग्य !

धनिक—हँ हँ, हुनका की भेलन्हि ?

राजा—हैतिहन्हि की ? जे होइत अछि, जे हैबाक चाही—सैह भेल ।

हमर पितृदेव महाराज मदनेश्वर देव क नजरि पड़ल हुनका ऊपर ।

बस ! पवित्र भ' गेलीह ।

धनिक—[सुँह भाँपि लैत अछि] ओह ! की लज्जा ! की घृणा !—हमर समस्त शरीर मे पापक स्पर्श ! ओह ! एहि उच्छिष्ट जिनगी सँ त मृत्युए नीक अछि ।

राजा—आ हा हा ! [सान्त्वना देवाक भंगिमा मे] बेचारा ! मरबह कियैक ? तोहर त आइ आनन्द क दिन छह—तौ जानलह जे तोहर खून क स्रोत मे किछु बिलासपुर क राजपरिवारो क दान अछि ।

धनिक—[मूढ़ी उठवैत] ठीक ! हम कियैक मरब ? हम नहि मरब ! [हँसैत-कानैत] हम नहि मरब ! [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत अछि और पुनः घूरि कए अश्रुसिक्त नयन सँ] मुदा सरकार, अपने एत्तेक विराट संवाद देलहुँ हमरा; हम कोना बिसरब महाराज ? हम एकर मोल चुका देब ।

राजा—मोल ? तौ की मोल द' सकैत छह एहि राजमहल केँ ?

धनिक—हम एत्तेक बड़का मोल देब जकर आशा ई विशाल महलो नहि क' सकैत अछि ।

राजा—कनेक हमहुँ त सुनी [हँसैत] केहन, कोना, कत्तेक हैत ओकर दाम ?

धनिक—[क्रोध सँ कंठ कठिन भेल छैक] महाराज ! [शुष्क हँसी हँसि

देख] ओ मोल कोनो प्रश्न क लेल प्रतीक्षा नहि करैत अछि । ओकर नाम थीक प्रतिशोध और प्रतिशोध शुरू भ' गेल अछि पहिनहि, हमरहु सँ बिना पुछनहि ।

राजा—प्र - ति - शो - ध ? [हँसैत छथि ।]

धनिक—हँसू नहि महाराज ! अपने क हँसी क शब्द जाहि देवार सब पर आघात करैत अछि—काल्हि ओ देवार क पतन हैत । काल्हि अहाँ क दम्भ क देवार ढहि जाइत ।

राजा—काल्हि, आगामी काल्हि ? [व्यंग्यात्मक कंठ मे हँसैत] अच्छा ? तों ज्योतिष जनैत छह की ? [स्वर बदलि कए] देवार ढहवाक बाद की-की हैत, कनेक हमर हाथ देखि कए बता त दैह । [हाथ बढ़-वैत हँसैत छथि ।]

धनिक—ई हँसी अपने केँ बहुत महग पड़त । एक दिन हम अपने क पोषाक मे ओही ठाम ठाढ़ भ' कए हँसब !

राजा—अहा...हा...हा...हा, एक दिन कियैक—आइये सँ हो !

धनिक—रानी माँ केँ हम माता क समान बुझैत छी; तँ, पूजा क समय धरि अपने क अहंकार आ' सम्मान क ऊपर पर्दा टांगने रहब । किन्तु तकर बाद.....

राजा—नहि नहि, ताहि मे त और सात दिन देर भ' जायत । ताहि सँ त नीक हैतह—काल्हिये एक बेरि चेष्टा करिह' । काल्हि त महफिल मे आबिये रहल छह !

धनिक—नहि महाराज ! महफिल हम अपनहि घर मे तीन दिन सुनि चुकल छी !

राजा—ताहि सँ की ? काल्हियो पन्नाबाइ क मुजरा.....।

धनिक—माफ करब 'महाराज' ! मुजरा सुनबाक सौख अपनहि पूरा करब ! हम त साधारण लोक छी—उधार क पाइ सँ महफिल क शान नहि बघारैत छी ।

राजा—[क्रूर भ' कए] की ? हम उधार क पाइ सँ ई महफिल लगौने छी ?

तोहर एत्तोक स्पर्शा जे तौ.....

धनिक—धीरे सरकार, धीरे। एखनहु सब क्यो नहि जनैत अछि।

कियैक सबकेँ जनबै चाहैत छी ?

राजा—मुदा, तोरा.....तोरा ई-ई सबके कहलकह ? निश्चय दीधान कहने हैतह। हम एखनहि बजबैत छी—(लचकठें) चतुर, चतुर !

धनिक—आ...हा...हा...हा ! एत्तोक व्यस्त कियैक भ' रहल छी ? एहि मे लज्जा क कोन बात अछि ? सात दिन खूब ठाठ सँ रहू। तकर बाद जखन महल खाली करै पड़त—तखन देखल जैतैक !

राजा—[क्रोधें] क्की ? म-महल खाली करै पड़त ? तोहर हुकुम सँ ?

धनिक—नहि नहि, हमर हुकुम अपने कोना मानि सकैत छी ? हुकुम त अदालते सँ आओत। [प्रसंगान्तर करवाक अभिनय क' कए अन्य स्वर मे कहैत अछि।] मुदा, ताहि लेल अपने घबड़ाउ जूनि। एखनहु सात दिन समय अछि। कालिह अहाँ खूब ठाठ सँ महफिल जमाउ ! मुदा, हम नहि आवि सकब; कारण, हमर संदूक क मोहर मारल टाका आन ककरहु हाथें महफिल मे उड़ै—और सेहो हमरहि आगाँ—हमरा नीक कोना लागत; कहू ?

राजा—[गरजैत] धनिक लाल !

धनिक—आ...हा...हा, आस्ते। क्यो सुनि लेत। प्रतिशोध शुरू भ' गेल।

[धनिक प्रस्थान करैत अछि। राजा दुनू हाथ सँ मुँह भाँपि लैत छथि। चारु कात सँ धनिक क स्वर प्रतिध्वनित होमय लगैछ हमर सन्दूक क मोहर मारल टाका...मोहर मारल टाका... मोहर.....टाका..... सात दिन खूब ठाठ सँ रहू.....सात दिन..... मात्र सात !]

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

[राजमदल क अन्तःपुर]

सरमा—देखू त खबास; पूजा त आवि गेल और अहाँ दिन-राति एसगरे
खटि-खटि कए.....

चतुर—सब भ' जैतैक, सरकार ।

सरमा—देखू ने, एखन धरि.....

चतुर—दीवान जी अपनहि जा-जा कए सब ठाम निर्मंत्रण-पत्र बाँटि आयल
छथि । हँकागो सब केँ पड़ि गेल छनिह ।

सरमा—खैर; निर्मंत्रण सब केँ पड़ि चुकल, ई एक बड़का काज भ' गेल अछि ।

चतुर—जनैत छी सरकार, एहि बेर गांभे टा नहि; समस्त पाली क लोग
मुह बौने अछि जे पूजा कहिया आओत ।

सरमा—खे त सब बेर लोग पूजा लेल उताहुल रहैत आयल अछि ।

चतुर—नहि-नहि; तै नहि । एहि बेर केँक बर्ष क बाद फेरो जे नाटक भ'
रहल छैक । कलकत्ता सँ नाटक-मंडली आवि रहल अछि—ई सुनिताहि
सब आनन्दे अधीर भ' गेल अछि ।

सरमा—किन्तु खबास, हमरा त बड़ चिन्ता.....

चतुर—सरकार, अपने केँ कोनो चिन्ता नहि करबाक चाही । कोनो त्रुटि...

सरमा—नहि खबास, राजा केँ मौन और स्थिर देखि कए हमरा भय भ'
रहल अछि ।

चतुर—हँ; आन बेर कतेक लत्साह सँ सभ काज क देख भाल स्वयं करैत

छलाह, किन्तु.....

सरमा—ओ त ने चलैत छथि, ने फिरैत छथि, ने प्रसन्न होइत छथि आ' ने क्रीधे करैत छथि ।

चतुर—सरकार क बदासी क कारण ईहो भ' सकैछ जे एहि बेर दीवानजी क जिह सँ गुणी-कलाकार तथा पंडित आदि केँ बिदा क' देल गेलन्हि । तँ.....

सरमा—के जाने.....!

[तखनहि मोहिनी अत्यन्त चिन्तित मुद्रा मे प्रवेश करैत अछि । चतुर बाहर चलि जाइत अछि ।]

मोहिनी—माय ।

सरमा...की ? बाज ने ।

मोहिनी—एक टा बात छल ।

सरमा—हमरा सँ ? शुभंकर त प्रसन्न छथुन्ह ने ?

मोहिनी—हँ !

सरमा—त बाज ने । की कहैत छेँ ?

मोहिनी—माय, हमरा टाका चाही ।

सरमा—टाका ?

मोहिनी—हँ माय ! टाका ! हमरा बीस हजार टाका चाही ।

सरमा—बीस हजार !

मोहिनी—हँ माय, बीसे हजार; नहि त हमरा सभ क सम्पूर्ण भविष्य नष्ट भ' जायत । शुभंकर.....

सरमा—[बड़बड़बैत] बी...स हजार ! बीस हजार.....बीस हजार ।

भविष्य नष्ट.....बीस हजार ! एत्तेक टाका ? ई कोना.....? त बेस; बाबू जी केँ कहुन्ह । मोहिनी, हम कोना कहियौक जे राजमहल क विशाल तिजोरी मे आव किछु नहि, किछु नहि छौक.. ...।

[तखनहि 'चतुर-चतुर' हाँक दैत राजा साहब प्रवेश करैत छथि ।]

राजा—[दुनू के चिन्ता तथा उद्वेग-युक्त देखि कए] की बात थीक मोहिनी ?

दुनू माय-बेटी एतय ? हुभंकर कतय छथि ?

मोहिनी—ओ अपन कमरा मे छथि ।

राजा—ओ ! [कहि कए मंच क अन्य भाग दिसि बढ़ैत उद्विग्न जकाँ प्रस्थानोद्यत होइत छथि ।]

मोहिनी—[सरमा के इंगित करैछ, किन्तु ओम्हर सँ किछु उत्तर नहि पाबि स्वयं आगाँ बढ़ैत] बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूरि कए] हँ बेटी ।

मोहिनी—[कनेक धखाइत] अपने सँ एकटा बात छल ।

राजा—[विस्मित भए] हमरा सँ ?

मोहिनी—जी हँ ।

राजा—[पास अबैत सस्नेह] बाजह, की कहबह ।

मोहिनी—बात ई थीक... माने... हम माय के सब किछु कहि देने छियैक ।

राजा—हँ हँ; की बात थीक ? साफ-साफ बाजह ने !

मोहिनी—माने.....हमरा किछु टाका चाही..... काल्हिये.....बीस हजार टाका ।

राजा—टाका ? तौ की करबह टाका ल' कए ?

मोहिनी—हमरा.....माने हमरा दुनू के बियाह क बाद एकर आवश्यकता अछि ।

राजा—एत्तेक टाका ! किन्तु कोन काज क लेल ?

मोहिनी—ओ विछाड़त जाए चाहैत छथि ।

राजा—बड़ नीक । [शून्य दिसि देखैत] टाका ! ओ टाका ! किन्तु बीस हजार टाका ?

मोहिनी—हँ, ताहि सँ कम से त नहिये हैत । तखन बेसी लागने बाद से ल' लेब ।

राजा—मुदा बेटी, एखन त एत्तेक टाका... एकहि संग किछु मोसकिल हैत ।

मोहिनी—किन्तु से नहि भेने त.....हमरा सभ क सब स्वप्न टूटि जायत ।

राजा—स्वप्न टूटि जायत ? किन्तु बीस हजार टाका ? ओफ !

मोहिनी—हमरा सभ क सर्वनाश भ' जायत । हम ककरो मुँह देखैबा जोग नहि रहि जायब ।

सरमा—[प्रवेश क' कए आगाँ बढ़ैत] मोहिनी !

मोहिनी—माय, की बीसहु हजार क लेल हमरा लोकनि केँ.....?

सरमा—मोहिनी, जे तोरा बहुत पहिनिहि जानबाक चाही बा जे हमरा लोकनि केँ बहुत पहिनिहि अता देवाक चाही, से यथार्थ बड़ भयंकर अछि । [किछु कपसैत] तोरा पहिने नहि कहलियौक जे तोरा दुःख पहुँचतौक । मुदा..... [नोर चुकबैत पाछाँ घूमि कए अगुआ जाइत छथि] ।

मोहिनी—बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूमि कए अगुआबैत] हँ बेटी ।

मोहिनी—की ? हमरा लोकनि क लेल बीसो हजार.....?

सरमा—बीस हजार की, बीसो सौ आइ सपना थीक ? सब शून्य भ' गेल अछि । ई बड़का सन्दूक, ई राज, ई राजमहल सब शून्य; सब शून्य !

मोहिनी—[आँखि मे नोर भरि कए] बाबू जी, हम सब की सत्ये आव कंगाल बनि गेल छी ? ई महल, ई ठाठ-बाट, ई महफिल !

राजा—तोरा लेल चेष्टा कैल जा सकैछ.....कहुना किछु.....।

सरमा—[राजा केँ लक्ष्य कए] अहाँ केँ ई की भ' गेल अछि ? आव नहि भागू अपना सँ । अहाँ साफ-साफ कियैक ने बाजि सकैत छी जे अहाँ क बिराट तिजोरी एकदम शून्य भ' गेल अछि और अहाँ क जमीन-जगह सब महाजन क सन्दूक मे बन्द भ' चुकल अछि !

मोहिनी—माय ! ई की !

सरमा—[राजा केँ] ई कियैक ने कहि दैत छियैक जे ई महलो धरि बनहूकी पड़ि गेल अछि !

मोहिनी—[अश्रु-पूरित नयन सँ देखैत] बाबू जी, ई की ? माथ पर क महल क चादरि सेहो महाजन क हाथ मे जा चुकल अछि ? [राजा कें निरुत्तर देखि] एतेक जमीन ! एहन महल ! [सरमा दिसि देखैत] मुदा हमरा पहिने एहि बात क पता कियैक नहि देल गेल ?

सरमा—तोरा पते द' कए की होइत ?

मोहिनी—बहुत किछु भ' सकैत छल । हम पढ़नाइ बन्द क' सकैत छलहुँ और नौकरी क' सकैत छलहुँ ।

राजा—धाम्ह ! बिलासपुर क राजकन्या नौकरी करत गे ! और ओहि पाइ सँ हमरा सभ क गुजर चलत ! ताहि सँ त मृत्यु नीक !

सरमा—और जे दिन आवि रहल अछि से कि मृत्यु सँ कम भीषण हैत ?

मोहिनी—ओह ! जौ पता रहतिहै त हम सपना देखब त बन्द करितहुँ ।

राजा—एहि से हमर कोन दोष ? हम की करितहुँ ?

सरमा—किछु नहि क' सकितहुँ, मुदा जे नहि करबाक छल से कियैक कैलहुँ ?

राजा—हम की कैलहुँ अछि ?

सरमा—[आवेश मे] अहाँ राजमहल क बेचि कए महफिल नहि बैसौने छी—अन्तिम सम्पत्ति धरि स्वाहा क' कए एहि बेर पूजा मे नाटक-नाच-गाना क व्यवस्था नहि कैने छी ?

राजा—[आवेश मे] बुझलहुँ; सब हमरहि दोष अछि ! सब हमरहि दोष ! हम की करितहुँ । हम की करू ? लोग सब लग जा कए भिक्षा माँगने फिरु जे हम पूजा करब, हमरा पाइ दे; हमर बेटी पढ़त, हमरा पाइ दे; हमर जमाइ बिलाइत जागत, हमरा पाइ दे; हम मरब, श्राद्ध लेल पाइ दे ! कहू, हम की करितहुँ ?

सरमा—[कानैत] ककरहु कोनो दोष नहि, सब दोष हमर भाग्य क ! [मोहिनी माथ कें सान्त्वना दैछ । तखनहि मंच अन्हार भ' जाइछ । मीगुर क भर्-भर् । दूर सँ करुण वाद्य-ध्वनि आवि रहल अछि ।]

द्वितीय दृश्य

[अन्तःपुर क दृश्य । मंच पर अनहार पसरल अछि । शुभंकर ग्रीफकेस नेने प्रवेश करैत छथि । मात्र हुनक पैर पर आलोक-पात भ' रहल छन्हि । किछु दूर जाइत ओ पाछाँ घूरि कए देखैत छथि । तखनहि बिजली चमकैत अछि और ठनका जोर सँ ठनकैत अछि । ओ पुनः आगाँ बढ़ि रहल छथि कि ताचत् पाछाँ सँ मोहिनी हुनका पर टा च' वारैत छन्हि ।]

शुभंकर— [चोंकि कए पाछाँ घूमैत] के ? के छी ओतय ? [अगुआ कए] ओ ! अहाँ !

मोहिनी—[व्यंग्य क स्वरें] कियैक ? निराश भ' गेलहुँ ?

शुभंकर—नहि निराश कियैक हैब ? आश्चर्य मे पड़ि गेलहुँ । अहाँ एसगर एतय.....साहस खूब अछि अहाँ के.....!

मोहिनी—पुछलहुँ नहि—कियैक एतय ठाढ़ छी ?

शुभंकर—पुछबाक इच्छा छल । मुदा जखन अहीं कहलहुँ त.....

मोहिनी—तखन मुनू । हम एतय ठाढ़ छी आन ककरहुँ साहस क परीक्षा लेबाक लेल ।

शुभंकर—परीक्षा लेबाक लेल ? [हँसैत] ककर ? हमर ? नो डीयर, ई त आइ अहाँ मध्ययुगीन नायिका जकाँ बात क' रहल छी ।

मोहिनी—अच्छा आव अहाँ केँ हम एतबाक प्राचीन, एतबाक पुरान वस्तु लागे लगलहुँ ?

शुभंकर—लुक ! वस्तु त पुरान होइते अछि । जकरा एक दिन पास रखैत छी, दोसर दिन त ओ पुरान हैबे करत । और जे लोक ओही पुरान वस्तु क जड़ि पकड़ि कए रहैत अछि, सेहो पुरान भ' जाइत अछि । ठीक कि नहि ?

मोहिनी—ठीक । अहाँ अपन क्लास क लेक्चर मे ई बात नहि जानि कत्तेक बेरि कहने हैबैक ।

शुभंकर—अवश्य । आइ टीच ह्याट आइ थिंक एण्ड आइ थिंक ह्याट आइ हू ।

मोहिनी—तखन पढ़ौनाइ कियैक नहि छोड़ि दैत छी ?

शुभंकर—नो ! डोंट बि सिली मोहिनी । आफटर ऑल टीचिंग इज माइ प्रोफेशन और अहाँ त जनिते छी; हम सेहो छोड़ि रहल छी ।

मोहिनी—हँ, नौकरी छोड़ि बिदेश जा रहल छी ।

शुभंकर—किन्तु जत्तेक दूर कियैक ने जाउ, अहाँ केँ नहि बिसरब मोहिनी ।

मोहिनी—अच्छा ! हमरा नहि बिसरब ? आइ अहूँ मध्ययुग क नायक जकाँ प्रतिज्ञा क' रहल छी ।

शुभंकर—ई हमर प्रतिज्ञा नहि थीक, ई हमर वासना थीक ।

मोहिनी—और अपन प्रतिज्ञा सब केँ छोड़ि कए जे बिदेश जा रहल छी तकर की हैत ?

शुभंकर—ककर प्रतिज्ञा, केहन प्रतिज्ञा ? आधुनिक मनुष्य कोनो प्रौमिस नहि करैत अछि मोहिनी ।

मोहिनी—एकर बाद अहाँ कहब—आधुनिक मनुष्य प्रेमो नहि करैछ । सैह कि नहि ?

शुभंकर—राइट यू आर ! देखर इज नो वर्ड लाइक लव । प्रेम नामक शब्द कत्तहु नहि अछि मोहिनी । ओ एक एहन शब्द अछि जकर अहाँ व्यवहार क' सकैत छी, नहियो क' सकैत छी । दैट इज ऐबसोल्यूटली ऑप्शनल ।

मोहिनी—तखन गत आठ मास सँ अहाँ क संग हमर सम्पर्क छल तकरा की कहब ? हम कोन नाम ल' कए आगाँ क दिन सब बितायब ?

शुभंकर—दैट वॉज एडजस्टमेंट डियर एण्थ नॉट लव; नॉट एट ऑल ! हम अहाँ क मित्र छलहुँ, एखनहुँ वन्धु छी ! बिलीव मी ।

मोहिनी—विश्वास हमरा करै पड़त शुभंकर । विश्वासे ल' कए त बाकी जिनगी बितायब ।

शुभंकर—अहाँ क महल, अहाँ क ई गाम बहुत, बहुत सुन्दर अछि मोहिनी । एतय त कयो अपन जिनगी बिता सकैत अछि ।

मोहिनी—हम त जिनगी बितायब। मुदा अहाँ कि और चारि दिन नहि बिता सकलहुँ ?

शुभंकर—ताहि सँ कोनो अन्तर नहि हैतिहै। की भेद छैक—आइ वा कारहि ?
मोहिनी—तखन आइ घूरि चलू—प्लीज। हम अनुरोध करैत छी, हम प्रार्थना करैत छी।

शुभंकर—आह, डोंट बि सिली मोहिनी। नेनपन जुनि करू। आइ घूरि जैने की हैत ?

मोहिनी—कारहि भोर माँ केँ अपन मुँह देखा सकब। नहि त.....

शुभंकर—लुक मोहिनी ! हम रही वा नहि, भोर हैवे करत।

मोहिनी—अहाँ कियैक नहि बुझैत छी जे अहाँ क एखन एतेक राति केँ चलि गेने लोक हमरा की कहत ? हमर प्रेम क लोक कसोक दूर धरि विश्राम करत ? कइत—ओ सब बनाओल कथा छल। शुभंकर हमर अहाँ क सपना क अपमान हैत। अहाँ नहि जाउ।

शुभंकर—अहाँ क धारणा सत्य नहि, हम चोर जकाँ पलुआरि सँ नहि भागि रहल छी। गेल छलहुँ सामने सँ, ऐलहुँ सामने सँ—अहाँ क बाबू जी सँ 'विदा ल' कए।

मोहिनी—मुदा एहन की भ' गेल जे अहाँ पूजा क दू दिन पहिनहि चलि जा रहल छी ?

शुभंकर—दू दिन मे बहुत किल्ल होइत छैक मोहिनी ! दू दिन मे हम बहुत आगाँ बढ़ि सकैत छी और दू दिन एतय रहबाक अर्थ थीक दू दिन पछूआ जायब। और अहाँ त नीक जकाँ जनैत छी जे हम पहुआयल रहैबला मे सँ नहि छी।

मोहिनी—एहि दू दिन मे अहाँ की करब शुभंकर ? बहुत टाका कमायब ?
जिनगी क दोसर कोन पथ क सन्धान पायब एहि दू दिन मे ?

शुभंकर—पथ छोड़ू मोहिनी, हमरा आव समय नहि अछि।

मोहिनी—समय नहि अछि ? हमरो लेल नहि ?

शुभंकर—अहाँ जौ टाका क जोगाड़ क' सकी तखन.....

मोहिनी—टाका सँ की हैत शुभंकर ? टाका सँ अहाँ को नापैत छी ?
 शुभंकर—बहुत किछु हैत । एखन्का प्रति सुहृत् केँ निश्चिन्त करबाक लेल,
 आगामी दिन क प्रत्येक सुख पर कञ्जा करबाक लेल टाका क दरकार
 अछि । ई दुनिया जनैत अछि मोहिनी, [कनेक ठिठकि कए अगुआवैत]
 जौ टाका हो त हमर डेरा क पता बुझले अछि, आवि सकैत छी ।
 मोहिनी—हम.....हम चेष्टा करब । सुदा हमर एतबा टा बात मानू ।
 कादिह पूजा थीक; कादिह टा.....
 शुभंकर—बात केँ दोहराब जुनि मोहिनी । हमरा देर भ' रहल अछि । हमरहुँ
 पूजा करै पड़न, हमर पूजा हमर जीवन क, हमर भविष्य क
 निश्चिन्तता, हमर पूजा, हमर टाका.....!

[तखनहि मंच पर अन्हार भ' जाइछ]

तृतीय दृश्य

[अभिमान कुमार एतगरे मंचपर उच्चासन क पास पाछाँ घूमि कए
 पान-पात्र सँ मदिरा ढारि रहल छथि । केवाड़ी पर कराघात क शब्द सँ
 मुख पर खिन्नता क छाप आवि जाइत छनि । पाछाँ सँ बहुत मद्धिम स्वरें
 पन्नाबाइ क गीत सुनल जाइछ । तखनहि पूजा क ढोल-ढाक बाजै लोगैछ ।
 धीरे-धीरे ओही त्रिलीयमान भ' जाइछ ।]

राजा—के ? [उत्तर नहि प्वाबि] चतुर, चतुर ! देख त के आयल ?

विंरचि—[निःशब्द भावें प्रवेश कए] हम, हम छी सरकार ! विंरचि ।

राजा—ओ ! [मदिरा-पान करैत] की कहब ? कहू ! आइ अहाँ क सब
 किछु हमरा नीक लागत । [हँसि कए] कारण, आब कोनो संवाद बाकी
 नहि अछि, ने बाकी अछि कोनो टा सम्पत्ति, जे अहाँ हमरा आन दिन
 जकाँ चोँका देब ।

विरंचि—हम, हम कोना कहू जे.....।

राजा—जे की ?

विरंचि—सर्वनाश भ' गेल अछि मालिक ।

राजा—[बिस्मित जकाँ] भ' गेल अछि ? खैर [हँसि कए] तखन की हैत ?

विरंचि—[सरमा केँ प्रवेश करैत देखि] रानी जी, सर्वनाश भ' गेल अछि ।

घनिक अदालत सँ डिगरी ल' कए मकान दखल करै आबि रहल अछि ।

सरमा—केँ घनिक ?

विरंचि—हम कत्तेक समझौलहुँ बुझौलहुँ, मुदा ओ मानिते नहि अछि ।

राजा—[पुनः मदिरा ढारैत] सुनल रानी जी ! अपने क राज्य [पान करैत] चलि गेल !

सरमा—[पास आबि कए] अहाँ, अहाँ की छी ? [शराब क पात्र ल' लैत छथि ।]

राजा—कियैक ? बिलासपुर क भूतपूर्व राजा अभिमान कुमार देव.....

मुदा अहाँ एखन एतय कियैक ?

सरमा—अहाँ केँ त किछु खबरि नहि, होश नहि, एम्हर.....

राजा—अहाँ कोन सर्वनाश क संवाद सुनायब रानी ! कहू, कहि कए त देखू जे चौका सकैत छी वा नहि !

सरमा—शुभंकर चलि गेल अछि । मोहिनी कालिह सँ जलग्रहण धरि नहि कँने अछि ।

राजा—नहि भेल रानी । ईहो कोनो नव संवाद नहि भेल । शुभंकर हमरहि सामने सँ गेल अछि । और मोहिनी ? [हँसैत] बुद्धिमती अछि; सब जनैत-बुझैत अछि । कालिह जे करै पड़तिहैक से आबूये कियैक नहि करत ?

सरमा—भगवान क सप्पत; अहाँ किछु त करू । [कनैत] अहाँ, अहाँ कनैत कियैक नहि छी ? [राजा केँ चुपचाप ठाढ़ देखि कए] अहाँ किछु करू, कानू, हँसू, भगवान केँ गारि दियौक, किछु करू । अहाँ केँ एहन पाथर सत देखि कए हमरा डर लगैत अछि । [कनैत]

राजा—डर ? डर कथीक रानी ? हमर नोर सुखा गेल अछि । एखन कोनो

दुःख दुःख नहि, वेदना वेदना नहि, कष्ट कष्ट नहि अछि । एखन त हम प्रतीक्षा क' रहल छी ।

सरमा—ककरा लेल ? धनिक लाल क लेल ?

राजा—[म्लान हँसी] देखैत छी, के अबैत अछि पहिने, धनिक वा मृत्यु !

सरमा—झी-झी ! एहन जुनि बानू ! अहाँ कियैक मरब ?

राजा—कियैक बाँचब ?

सरमा—हमरा लेल, मोहिनी क लेल ।

राजा—अहाँ दुनू क हाथ ध' कए भीख माँगवाक लेल ? जे हाथ एक दिन हजारो लोक केँ भिक्षा देने अछि, अहाँ चाहैत छी जे ओ भीख माँगै ?

सरमा—कियैक ? भाइ साहेब क पास जा सकैत.....

राजा—अहाँ क भाइ साहेब क पास ? इयैह कहबाक लेल जे आव हम अहाँ क प्रतिपालन नहि क' सकैत छी ?

सरमा—हे भगवान ! बन्द करु; बन्द करु ई सब बात ।

राजा—हँ सरमा, ई सब बात बन्द करी । हम सब, सब क्यो मिलि कए एकटा सपना देखी सरमा ! अन्यथा अहाँ जाहि दिसि देखब, मात्र अन्हार देखाइ पड़त ! मात्र अन्हार ! भीषण विकरार लोक सब ! हाथ मे गदा और...और सभ क पैर...पैर पर असंख्य नरक क कीट अहाँ केँ अश्लील इंगित करत ! ओकरा सभ क मुख मे विशाल गह्वर सब... ताहि मे हमर पिता, हुनक पिता, लूटन, तकर माय..... [कहैत-कहैत आँखि विचित्र भ' जाइत छनिह । सब क्यो हँसत और कहत—“कौ राजा साहेब” ? [कनेक संभरैत] तँ कहैत छी—हम सब एक सपना देखी !

सरमा—सपना ! केहन सपना ?

राजा—[सचेत भए] हँ सपना ! [हठात् उदास भ' कए] एकटा सपना देखब रानी ? काल्ह राति ओहि सपना क आधा देखने छी हम, आधा सपना छूटि गेल छल । हम ओहि सपना केँ जोड़ब रानी ।

सरमा—कोन सपना ?

राजा—एकटा विशाल नदी...नहि विराट समुद्र, ताहि पर एक जहाज,
 एकटा सपना क जहाज, जकरा ऊपर हम, अहाँ आ मोहिनी ! समुद्र क
 डेब सब ऊपर उछलि-उछलि कए हमरा सब के छुबै चाहैत छल ! हम
 सब जाहि बन्दरगाह पर गेलहुँ ओतय कोनो मनष्य नहि, मात्र कंकाले-
 कंकाल छल, जकरा सभ क देह पर अत्याचार क चिह्न.....

सरमा—नहि-नहि ! ई सपना नहि भ' सकैछ !

राजा—हँ रानी, हम इयैह सपना देखने छी । हम ओहि कंकाल सब सँ
 पुछलहुँ—हम के छी ? ओ सब कहलक राजा । हमरा ओ सब राजा
 कहलक, जनैत छी रानी ? [राजा आनन्दें अधीर भ' जाइत छथि]
 तखन हम पुछलहुँ, हम कतय जा रहल छी ? उत्तर मे ओ सब दूर क
 एकटा टापू देखा देलक, सुख क आवरण सँ वेढल एक निर्जन द्वीप ।
 ओ सब कहलक—ओतय राजे टा जा सकैत अछि । तखन हमर जहाज
 आगाँ बढ़ल । देखलहुँ ओहि द्वीप क चारु कात कादो-पानि पर लाखक-
 लाख कंकाल ठाढ़ भ' कए भीतर क लीला देखि-देखि इतिहास लिखि
 रहल छल ! और भीतर युधिष्ठिर, रावण, भोज, पृथ्वीराज चौहान,
 नादिर शाह, सिकन्दर, चन्द्रगुप्त, हरिसिंह देव, लखेसराय सब एक
 पाँती मे ठाढ़ ! सब एक पाँती मे । देखि कए हमर लालसा, हमर लोभ
 समुद्र क वेगहुँ सँ बढ़ि गेल । हम तुरत ओतय जँवाक लेल अहाँ केँ
 जहाज पर सँ थक्का द' कए गिरा देलहुँ अहाँ चीत्कार करैत डूबि
 गेलहुँ । तखन हम मोहिनी केँ उठौलहुँ [उत्तेजित भए] और ओकरा
 दूर टापू क पास फेंकि देलहुँ । ओ कंकाल भ' गेल । आ'तकर बाद
 हम...हम बिलासपुर क राजा साहब हम [तखनहि भयंकर हृदय पीड़ा
 सँ डगमगाइत छथि ।]

सरमा—ई की ? अहाँ केँ की भ' गेल ? ई की ?

विरंचि—सरकार !.....चतुर, चतुर ! डाक्टर.....जल्दी !

राजा—[निषेध करैत] नहि डाक्टर नहि ! [टगैत-बड़बड़बैत] जहाज...
 जहाज डूबि गेल रानी । ओ...ओ कंकाल सब लिखलक...जे एक छल
 राजा ! [तखनहि ठाक क शब्द धीरे-धीरे बढ़ि कए तीव्रतर भए पुनः
 मन्द भ' जाइछ । सर्वत्र अन्धकार, केवल अगिला कोन पर ठाढ़
 घोषक पर प्रकाश पड़ेछ ।]

घोषक—बहुत आशा छल जे एक नीक नाटक देखाबी, मुदा जे बजौलन्हि
 सैह राजा जखन नहि रहलाह तखन हम सब ई अभिनय नहि क' सकैत
 छी । अपने लोकनि सँ प्रार्थना जे हमरा क्षमा करब ।

लेखक परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ।

संस्कृत, मैथिली, बंगला, हिन्दी, फ्रेंच तथा अंग्रेजी क विशेष अध्ययन ।
भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्नातक । परीक्षामे प्रथमश्रेणी मे प्रथम स्थान :
साहित्य, संगीत आ' चित्रकला मे विशेष रुचि ।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—

कवयो वदन्ति (१६६६, मैथिली कविता-संग्रह)

अमृतस्य पुत्राः (१६७१, मैथिली कविता-संग्रह)

नायक क नाम जीवन (१६७१, मैथिली नाटक)

एक छल राजा (१६७३, मैथिली नाटक)

तत्काल, १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ मे अवस्थिति ।

स्थायी निवास—

ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिल्ला—सहर्षा ।